चन्दामामा
मई १९७८

PARLE

Poppins colouring contest: Prize-winners roll call.
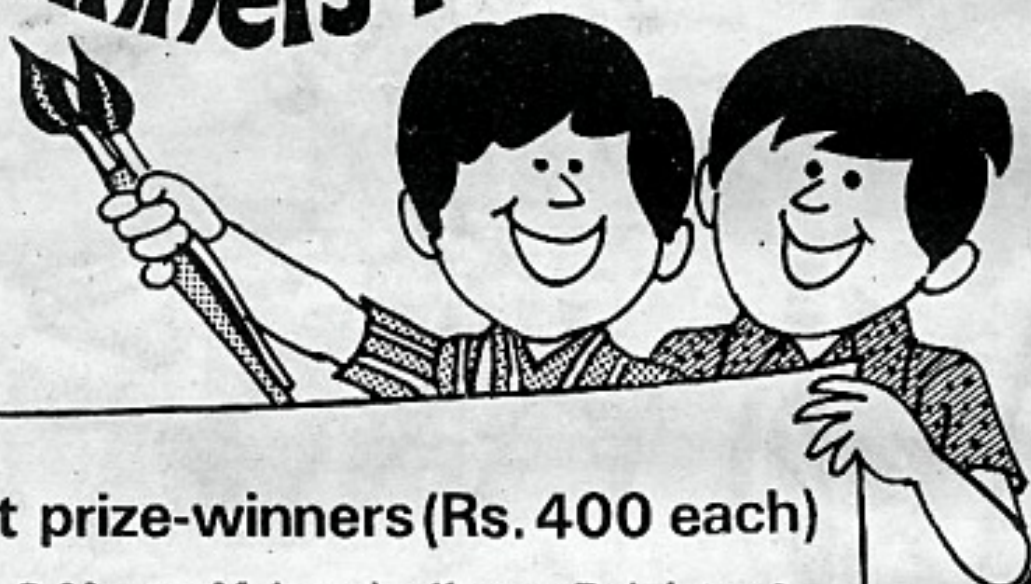
1st prize-winners (Rs. 400 each)

- **Master Mrigendra Kumar Dalui,** Age 8
  16, Kuchil Sarker first bye lane,
  Howrah-711 101.

- **Master Vijay Anand,** Age 5
  C/o. V.S.P. Rao, 49, Purasawalkam High Road,
  Madras 600 007. Tamilnadu

- **Miss Chetnaben D. Patel,** Age 11
  Rajendra Kumar B. Amin,
  Pardeshi Fadia, Madanzanpa Road,
  Vadodara, Gujarat.

- **Master Sanjeev Kumar,** Age 12
  Q. No. 926, Sector 6, R.K. Puram, New Delhi.

2nd prize-winners (Rs. 200 each)

- **Miss Mamata Rani Dey,** Age 10
  Sujit Foto Binding, Dolomukh, Sibsagar (Assam).
- **Master Radheshyam Meher,** Age 11½
  C/o. Damodar Meher, At P.O. Tarbha,
  (Rathpara), Dist. Bolangir (Orissa) 767 016.
- **Master Kumar Nandan,** Age 8
  C/o. T. Bhasker Rao, Navachaitanya Bldg.,
  Hubli Road, Dharwar, Karnataka.
- **Master Johnson Fernandez,** Age 8
  121/17 Subash Market, Hindwadi, Belgaum, Karnataka.
- **Master Valerian Thomas D'Souza,** Age 12
  Western Railway Quarter No. 12/14,
  S. V. Road, Bandra, Bombay 400 050.
- **Master Mukesh Manubhai Patel,** Age 12
  13, Kunavareshwar Society, Harni Road, Vadodara, Gujarat.
- **Master Prem Singh Bhadari,** Age 11
  Ajapur Danda, P.O. Nehru Gram, Dehra Dun, U.P.
- **Master Mahesh Kumar Goyal,** Age 11
  C/o. Shri Sukha Ram Goyal, Near Punjab
  National Bank, Kothi, Dholpur (Rajasthan).

3rd prize-winners (Rs. 100 each)

- **Master Joy Deep Roy,** Age 11
  C/o. Mr. P.K. Bose, "BASUDHA", Latbagan
  P.O. Sahaganj, Dist. Hooghly, W.B.
- **Miss Sunanda Patra,** Age 9½
  C/o. P.K. Patra, QR. No. 3 Block Colony, Jagat Singh Pur,
  P.O. Jagat Singh Pur, Dist. Cuttack (Orissa).
- **Master M. Shahbaz "Akhtar",** Age 11½
  C/o. M. Akhtaruliman P.O. At—Nathnagar (Bhagalpur), Bihar.
- **Master Malay Kumar Karmakar,** Age 12
  13/1, Chidam Mudi Lane, Calcutta 700 006. W.B.
- **Master M. B. Ravi Kumar,** Age 11
  Shanti Bhavan, Doddathota Post, Sullia 574 239,
  D. Kannada, Karnataka.
- **Master Y. V. Arun,** Age 6
  3-8-131, Hyderguda, Hyderabad 29, Andhra Pradesh.
- **Master L. Ganesh Prasad,** Age 11
  1409 Kothwal Ramaiah Street, Shivarampet, Mysore, Karnataka.
- **Master J. Babu,** Age 11
  St. Louis Institute for the Deaf,
  Adyar, Madras 600 020, Tamilnadu.
- **Miss Shobha Johari,** Age 11
  Savitri Girls School, Civil Lines, Ajmer, Rajasthan.
- **Miss Shashi Lata Chhattri,** Age 11
  H. No. 109/342, Ram Krishna Nagar,
  Kanpur 208 012, Uttar Pradesh.
- **Master Sunil Roy,** Age 12
  N-Block, 3/2 M.S. Flats, R.K. Puram,
  Sector 13, New Delhi 110 022.
- **Master Shashikant Jallandra,** Age 11½
  Shri D. J. Hindi Sc. School (Sikar), Rajasthan.
- **Miss Nilima Gajanan Gondhali,** Age 9
  E/100, R.B.I. Staff Quarters, Sion-
  Trombay Road, Chembur, Bombay 400 071.
- **Miss Pushpa Tiwari,** Age 10
  C/o. C.D. Tiwari, E/21/C, O.N.G.C. Colony, Vadodara, Gujarat.
- **Master Arvind Ramchandra Bhatt,** Age 12
  Dabhoiya Pole, Vadi Rangmahal, Vadodara, Gujarat.
- **Master Vishwas More,** Age 11
  C/o. Mr. M.K. More, Anand, P.O. Pimpalgaon,
  Taluka—Niphad, Dist. Nasik, Maharashtra.

Winners of the consolation prizes (Rs. 25 each) are being informed by post. All prizes will also be sent by post.

Parle congratulates all winners and thanks all entrants for making the contest a big success.

everest/78/PP/105

मई १९७८

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा अद्भुत ज्योतिषी है। अंध विश्वास बहुत हद तक हानि पहुँचानेवाले होते हैं, ख़ासकर वे मानव के प्रयत्न में बाधा डालते हैं। ज्योतिष के प्रति जिसका विश्वास होता है, वह अपने प्रयत्न में कोई दिलचस्पी नहीं लेता। इस कारण किसी मानव के द्वारा दुष्ट प्रयत्न को रोकवाने के लिए भी अंध विश्वास का सहारा लिया जा सकता है। इस कहानी में राजा वसंत अंध विश्वास के कारण ही युद्ध करना बंद कर देता है, जब कि शमंत राजा अपनी शक्ति से बढ़कर कार्य संपन्न कर लेता है।

वर्ष : ३० मई १९७८ अंक : ९

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

सुख दु:खे भय क्रोधौ,
लाभा लाभौ, भवाभवौ,
यच्च किंचित् तथा भूतं
ननु दैवस्य कर्मतत् ॥ १ ॥

[कारण व्यक्त न होनेवाले सुख-दुख, भय और क्रोध, लाभ और नुक़सान तथा जन्म और मृत्यु जैसी घटनाएँ संयोग से ही हुआ करती हैं।]

ऋषयो ह्युग्रतपसो
दैवे नाभि प्रपीडिताः
उत्सृज्य नियमां स्तीव्रान
भ्रश्यन्ते काम मुन्युभिः ॥ २ ॥

[अत्यंत उग्र तप करनेवाले ऋषि भी ईश्वरीय प्रेरणा से तपस्या के नियमों को त्यागकर कामादि के वशीभूत हो भ्रष्ट हो जाते हैं।]

असंकल्पित मे वेह
य दशस्मात् प्रवर्तते
निवर्त्यारंभ मारब्दं
ननु दैवस्य कर्मतत् ॥ ३ ॥

[प्रयत्नपूर्वक प्रारंभ किये गये कार्य को रोककर कभी संकल्प तक न किये जानेवाले कार्य का प्रारंभ करना संयोग ही तो है।]

देवता के कार्य

काकोलूकीयम

[५८]

राजा तथा चार मंत्रियों का विश्वास स्थिरजीवी के प्रति जम गया। इसलिए रक्ताक्षी के विरोध करने पर भी वे सब स्थिरजीवी को अपनी गुफा में ले गये। जब वे पहाड़ी गुफा में पहुँचे, तब अरिमर्दन ने उन्हें सुझाया–"स्थिरजीवी हमारा हितैषी है, इसलिए वह हमारे किले में जो स्थान पसंद करता है, वही स्थान उसे दे दो।"

ये बातें सुन स्थिरजीवी ने मन ही मन में यों सोचा: "मैं तो इन सबके विनाश की योजना बना रहा हूँ। क़िले के बीच रहने से सब लोगों पर मेरी गति विधियों का रहस्य प्रकट हो जाएगा। खासकर रक्ताक्षी और उसके अनुचर हज़ार आँखों से मुझ पर निगरानी रखे रहेंगे। इसलिए क़िले के द्वार के निकट रहने से जरूरी कार्यों पर बाहर जाने व आनेवाले लोग मेरे कार्यों पर ध्यान न देंगे।"

यों सोचकर स्थिरजीवी ने अरिमर्दन से कहा–"महाराज! आप तो बड़े ही उदार स्वभाव के हैं। मुझे आप अपने क़िले के भीतर थोड़ी-सी भी जगह दे तो पर्याप्त है! मैं रोज आप की सेवा में हाज़िर होकर अपने कर्तव्य का पालन करूँगा।"

अरिमर्दन स्थिरजीवी की नम्रता देख बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसकी इच्छा मान ली। स्थिरजीवी अपना स्वास्थ्य पुनः प्राप्त कर ले, इस ख्याल से उसे विशेष प्रकार के भोजन का प्रबंध किया गया।

अपनी सलाह की उपेक्षा करने तथा स्थिरजीवी के प्रति विशेष आदर प्रदर्शित करते देख रक्ताक्षी राजा से बोला– "महाराज, सोने का मल देनेवाले पक्षी

को छुड़ानेवाले राजा तथा उसके मंत्रियों की भांति आप का भी व्यवहार अत्यधिक अविवेकपूर्ण प्रतीत होता है।"

"वह कैसी कहानी है?" राजा और मंत्रियों ने भी एक स्वर में पूछा।

इस पर रक्ताक्षी ने यों सुनाया .

प्राचीन काल में एक पहाड़ी तलहटी में एक पक्षी निवास करता था। वह सोने का मल देता था। एक शिकारी इस विचित्र दृश्य को देख अचरज में आ गया। उस पक्षी को शिकारी ने जाल में फंसाया, तब सोचा कि अगर वह पक्षी उसके पास रहेगा और राजा को यह समाचार मालूम होगा, तो उसे दण्ड देंगे, यों सोचकर वह डर गया। तब उसे राजा के पास ले जाकर बोला–"महाराज! इसका मल खरा सोना होता है। इसलिए मैं आप को इसे उपहार के रूप में सौंपने आया हूँ।"

राजा ने अपने मंत्रियों से पूछा–"यह तो बड़े ही आश्चर्य की बात है। क्या हम इसकी जांच करके देख ले तो!"

मंत्रियों ने सुझाया–"महाराज! पक्षी का सोने का मल देना कैसे? इस तरह का सफ़ेद झूठ बोलनेवाले गंवार की बातों पर आप कैसे विश्वास करते हैं?"

राजा ने मंत्रियों की बातों पर कान देकर पक्षी को छोड़ दिया।

अरिमर्दन और उसके मंत्रियों ने यह कहानी सुनने के बाद भी वे स्थिरजीवी के प्रति और अधिक आदर दिखाने लगे।

इस पर रक्ताक्षी ने अपने अनुचरों से कहा—"इस राज्य का पतन होने जा रहा है। राजा तथा मंत्रियों की रक्षा करना संभव नहीं है। उन्हें हित की बातें रुचती नहीं; समय के रहते हम लोग इस क़िले को छोड़कर चले जायेंगे। कहीं शत्रु का सच्चा मित्र होना देखा भी गया है? कहा जाता है कि पुराने जमाने में एक गुफा ने बात की है!"

"वह कैसी कहानी है?" अपने अनुचरों के पूछने पर रक्ताक्षी ने यों बताया :

एक महारण्य में खरनखर नामक एक सिंह रहा करता था। एक दिन वह सारा जंगल छानता रहा, फिर भी उसे खाने को कुछ हाथ न लगा। सूर्यास्त के समय उसे एक बड़ी पहाड़ी गुफ़ा दिखाई दी। उसने सोचा—"रात को कोई न कोई जानवर इस गुफा के भीतर आ जाएगा। मैं उसे मारकर खा डालूंगा।" यों सोचकर वह सिंह गुफा के अन्दर जाकर सो गया। उस गुफा में एक लोमड़ी निवास करती थी। थोड़ी देर में लोमड़ी ने प्रवेश करके पूछा—"अरी गुफा! हे गुफा!" पर कोई जवाब नहीं आया। लोमड़ी ने फिर पुकारा। फिर भी कोई जवाब नहीं मिला।

लोमड़ी ने तीसरी बार पुकारकर कहा—"तुमने मेरे साथ समझौता कर लिया है। रात को मेरे लौटते ही मेरी पुकार का तुम्हें जवाब देना था। क्या तुम यह बात भूल गई हो? अगर तुम अपने वचन का पालन न करोगी तो मैं इसी शर्त के अनुसार किसी दूसरी गुफा में चला जाऊँगा।"

यह बात सुनकर सिंह ने अपने मन में सोचा—"लगता है कि यह गुफा पुकारने पर जवाब देती है। अगर मैं जवाब न दूं तो लोमड़ी चली जाएगी। मुझे भूखों मरना पड़ेगा।" यों सोचकर वह बोल उठा—"हाँ, क्या बात है?" सिंह का भयंकर गर्जन गुफा में गूंज उठा। लोमड़ी अपने मन में हँसकर बोली—"ओह, यह बात है! गुफा के बोलते मैंने कभी नहीं सुना है।" यों कहते वह भाग गई।

१९६. 'इन' राजाओं की समाधि

चीन के होनान राज्य के अन्यांग के समीप में ई. पू. २२ वीं शती के प्रथम दशक के इन राजाओं की समाधि प्रकट हो गई है। वह थोड़ी भी शिथिल नहीं हुई है। समाधि में प्राप्त कांसे की चीजों पर अंकित नामों से पता चलता है कि वह समाधि इन राजवंशी वुटिंग राजा की पत्नी की है। (इन राज वंश ने ई. पू. २६ से ११ वीं शती तक शासन किया था।)

इस समाधि में लगभग २०० कांसे के पात्र प्राप्त हुए हैं। उनमें ७० प्रतिशत पान पात्र हैं। इनमें बड़े पात्र जोड़ों के रूप में हैं। उन पर जानवरों के सिर अंकित हैं।

समाधि में ४०० जेड़ चीजें तथा शिला की चीजें हैं। उनमें दस मानवों की प्रतिमाएँ हैं। उनके द्वारा हमें उस युग की पोशाकों का पता चलता है। विचित्र बात यह है कि उनमें एक अर्द्ध नारीश्वर की प्रतिमा है। अन्य शिल्पों में शेर, भालू, बैल, हाथी, भेड़, घोड़े, बंदर, खरगोश, बाज, तोते वगैरह प्राणियों के चित्र भी हैं।
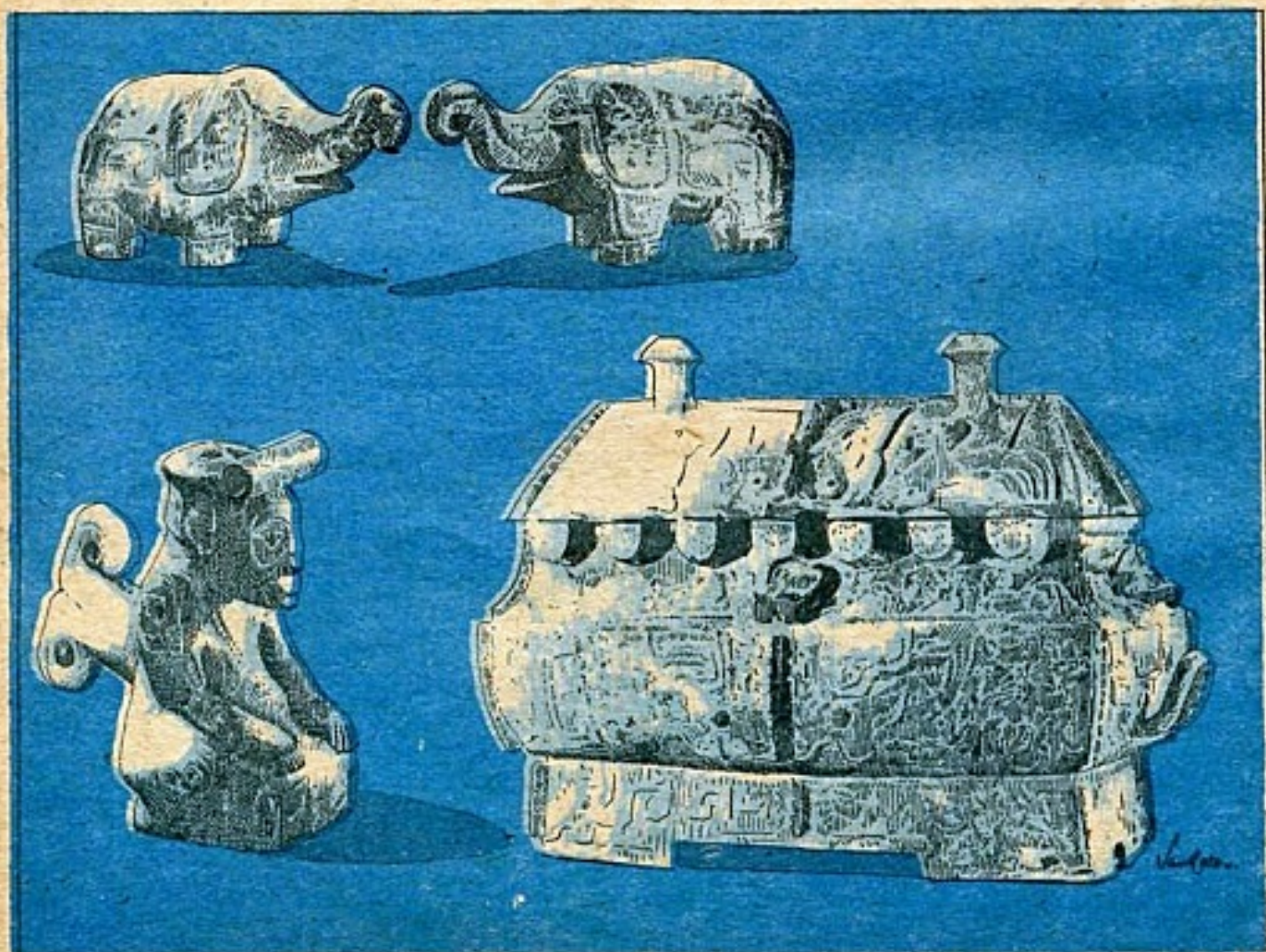
[२८]

[माया सरोवरेश्वर ने धोखे से जयशील के कंठ में फंदा कस लिया। जयशील ने उसे काटना चाहा। पर माया सरोवरेश्वर मीठी बातें करके कांचनमाला के साथ जयशील को भी माया सरोवर की ओर ले गया। यह ख़बर नर भक्षकों द्वारा सिद्ध साधक को मालूम हुई। बाद...]

नर भक्षियों ने सारा वृत्तांत सुनाकर विचित्र हाथी पर सवार व्यक्ति के द्वारा बन्दी बनाये हुए व्यक्ति का जब वर्णन किया, तब सिद्ध साधक ने भांप लिया कि वह व्यक्ति और कोई नहीं, बल्कि उसका मित्र जयशील ही होगा। मगर उसे संदेह होने लगा कि उस दुश्मन के साथ रहनेवाली वह युवती कौन हो सकती है?

राजा कनकाक्ष नर भक्षियों की बातें सुन विस्मय में आ गया। इस पर सिद्ध साधक ने राजा को समझाया—"महाराज! मुझे आज्ञा दीजिए! मेरे मित्र जयशील को माया सरोवर के दुष्ट लोग बन्दी बनाकर ले गये हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसे महान शूर उनके हाथ कैसे बन्दी बन गये हैं? चाहे जो हो, उनकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। मैं अभी जा रहा हूँ।"

इन शब्दों के साथ वह नर वानर के कंधों पर सवार होने को हुआ।

राजा कनकाक्ष ने उसे रोकते हुए कहा—"सिद्ध साधक! जयशील की रक्षा करने की जिम्मेदारी मेरी भी है। मैं थोड़े सिपाही और घुड़ सवारों को साथ ले तुम्हारे साथ चलता हूँ। मगर हमें शीघ्र माया सरोवर का पता लगाना अत्यंत आवश्यक है। तुम अपने जलवृक भट से क्यों नहीं पूछ लेते?"

सिद्ध साधक ने सर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी, तब अपने शूल को जलवृक राक्षस की छाती का निशाना बनाकर पूछा—"अबे जलवृक सेवक! सच बताओ, तुम मेरे विश्वासपात्र सेवक हो या अपने पुराने मालिक माया सरोवरेश्वर राक्षस की ओर से भेदिया बनकर यहाँ आये हो?"

यह सवाल सुनकर जलवृक थोड़ा भी विचलित हुए बिना अपने पत्थर के गदे को सिद्ध साधक के चरणों के आगे रखकर बोला—"मालिक! सच्चा जलवृक कभी झूठा वचन नहीं देता। अपने वचन को तोड़नेवाले का हम कुत्ते की तरह शिकार करते हैं। मैं आप के वास्ते अपने प्राण तक देने को तैयार स्वामिभक्त सेवक हूँ।"

"अगर यह बात सच है, तब बताओ, माया सरोवर कहाँ है?" सिद्ध साधक ने पूछा।

"मालिक! एक बार मैंने इसके पहले आप से निवेदन किया था कि सरोवर का पता बता देने से मेरा सर फूट जाएगा। यह मेरी जाति के लिए सरोवर के राजा के साथ हमारे राजा ने यह शाप दिया है।" दीनतापूर्ण चेहरा बनाकर जलवृक ने कहा।

इस पर सिद्ध साधक ठठाकर हँस पड़ा और बोला—"उस कमबख्त सरोवरेश्वर में शाप देने की शक्ति होती तो जब वह हँसों के रथ पर से उलटकर नीचे गिरा, तब वह सीधे नर भक्षियों की उबलनेवाली हंड़ी में जा नहीं गिरता, समझें!"

जलवृक ये शब्द सुनकर आपाद मस्तक कांप उठा, तब बोला–"मालिक! आप मेरी बातों पर यक़ीन नहीं करते। मेरी मौत अब निश्चित है। फिर भी मैं अपने मुँह से बताये बिना इशारों से समझा दूंगा, देखूंगा, शायद मैं बच जाऊं!" यों कहकर वह पेड़ से एक सूखी लकड़ी तोड़ लाया।

"वृकभट! तुम्हारे प्राणों के लिए कोई खतरा नहीं है। मैं महाकाल का भक्त हूँ। अगर किसी कारण से तुम मर भी जाओगे, तो तुम्हें कुछ ही मिनटों में कैलास भेजकर वहाँ पर सुखी बनने दूंगा।" सिद्ध साधक शूल उठाये आसमान की ओर देखते बोला।

जलवृक सूखी लकड़ी से जमीन पर लकीरें खींचते जब-तब चिल्लाने लगा–"ओह! मेरा सर फटा जा रहा है। मेरा कलेजा सिकुड़ रहा है।"

राजा कनकाक्ष जलवृक के समीप जाकर सिद्ध साधक से बोला–"सिद्ध साधक, मेरे बच्चों को पर्याप्त अंग रक्षकों का साथ दिये बिना जंगल में जाने देना कैसी विपदाओं का कारण बन गया है? बेचारा यह जलवृक सचमुच सर फूट जाने के कारण मर जाय तो?"

"महाराज! यह तो निरे मूर्ख है। महाकाल के दर्शन पाकर उनके आशीर्वाद पाये बिना कोई भी मानव दूसरों को शाप देने की शक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।" यों समझाकर सिद्ध साधक जलवृक के द्वारा खींची गई रेखाओं को देख पूछ बैठा–"अरे जलवृक! ये रेखाएँ कैसी? ये टेढी-मेढ़ी लकीरें क्या हैं?"

जलवृक राक्षस सर उठाये बिना आपाद मस्तक कांपकर बोला–"मालिक! ये तो निकट के पहाड़ हैं और ये हैं जंगल के वृक्ष। उनमें सबसे ऊँचा वृक्ष एक टीले पर है। उस पेड़ पर चढ़कर ऊपरी डाल पर पहुँच करके एक बार पूरब की दिशा में, फिर पश्चिम की ओर देख, तब उत्तर की दिशा में मुखावित होने पर माया

सरोवर दिखाई देगा ।" यों कहकर उसने अपने दोनों हाथों से सर थाम लिया, तब यह कहते धड़ाम से नीचे गिर पड़ा– "मालिक! मैंने रहस्य बता दिया है। मेरा सर फट जाएगा। ओह, मैं मर गया!"

सिद्ध साधक ने झट से झुककर जलवृक की नाक के पास हाथ ले जाकर जांच की, उसके द्वारा साँस लेते देख बोल उठा– "महाराज! अंध विश्वास कैसे खतरनाक हो सकते हैं; इसका सबूत यह जलवृक राक्षस है। यह शाप के डर से नीचे गिर गया है, मगर मरा नहीं है।" ये शब्द कहकर निकट खड़े नर भक्षियों को आदेश दिया–"अबे, तुम लोग तुरंत जाकर चार-पांच घड़े पानी लेते आओ।"

नर भक्षी लोग जलवृक राक्षस की ओर देखते मौन खड़े रह गये। इस पर सिद्ध साधक ने शूल उठाकर कहा–"दुष्टो, क्या तुमने मेरी आज्ञा नहीं सुनी? वहाँ से हिलते क्यों नहीं?"

नर भक्षियों के नेता का इशारा पाकर उनका पुजारी गणाचारी आगे आया। राजा कनकाक्ष के सामने साष्टांग दण्डवत करके बोला–"हम लोग जंगल के किसी कोने में अपने दिन काटते हैं, हमें शिष्टाचार का क्या पता? महाराजावाला नाम वास्तव में आप का नाम नहीं, वह आप की उपाधि है, यही हम सोच रहे थे। आप कृपया भूतों के इस नेता को यहाँ से हटवाकर हमें इस जलवृक राक्षस को दिलाइये। आप का यश गाते हम इसको खा डालेंगे।"

गणाचारी की बात पूरी न हो पाई थी, इस बीच सिद्ध साधक उसकी चोटी पकड़कर शूल उठाये डांट बैठा–"अबे नर भक्षी क्रूर प्राणी! तुम्हें मेरे शूल में चुभोकर महा काल की बलि देने जा रहा हूँ।"

सिद्ध साधक गणाचारी को शूल से चुभोने जा रहा था, तभी दूर से जलाश्व

पर वेग के साथ आनेवाला सर्पनख उस दृश्य को देख जोर से चिल्ला पड़ा–"सिद्ध साधक! जल्दबाजी मत करो। हमें माया सरोवर के जलवृक राक्षसों के साथ लड़ने का वक़्त आ गया है। हमें कोशिश करके देखना है कि हमारे इस प्रयत्न में इन नर भक्षियों की सहायता मिल सकती है या नहीं?"

यह पुकार सुनकर सिद्ध साधक ने शूल उतारा, सर घुमाकर देखा। मौक़ा पाकर गणाचारी दूर भाग गया और अपनी जातिवालों के दल में जा मिला।

सर्पनख सिद्ध साधक के समीप पहुँचकर घोड़े से उतर पड़ा, जमीन पर मृत हालत में पड़े जलवृक को देख बोला–"सिद्ध साधक, क्या तुमने इसको परलोक में भेज दिया है? यह तो हमारा विश्वास पात्र नौकर है न?"

"यह तो विश्वासपात्र नौकर ज़रूर है, मगर इसे तुम लोगों जैसे अपने राजा पर ही नहीं बल्कि सरोवरेश्वर की शक्ति में भी विश्वास है। किसी शाप की बात याद करते माया सरोवर तक जानेवाले मार्ग की रेखाएँ जमीन पर खींचते यह एक दम नीचे गिर गया है। मगर विश्वास करो, यह मरा नहीं है!" सिद्ध साधक ने उत्तर दिया।

इस बीच राजा कनकाक्ष के थोड़े से सेवकों ने बर्तनों में पानी लाकर जलवृक के सिर पर उंडेल दिया। ठण्डे जल का स्पर्श पाकर वह जलवृक राक्षस इधर-उधर लोटता रहा, आँखें खोले बिना चिल्लाने लगा–"मैं कहाँ हूँ? नरक में या माया सरोवर में?"

सिद्ध साधक ने जलवृक की पीठ पर लात मारकर कहा–"अरे जलवृक! तुम्हें शाप से मुक्ति मिल गई है। मैंने तुम्हें जिलाया है, उठ जाओ।"

ये बातें सुन जलवृक उठ बैठा। सर्पनख ने प्रसन्नतापूर्वक सर हिलाया। निकट में स्थित राजा कनकाक्ष और उसके

सैनिकों को देख कहा–"हंसों के रथ पर उड़ते समय वैद्य देव ने हमें बताया था, ये ही तो हिरण्यपुर के राजा कनकाक्ष हैं?"

राजा कनकाक्ष तब तक सर्पनख के विचित्र वेष तथा उसके जलाश्व को देख चकित था, अब उसकी बातें समझ न पाने के कारण पूछा–"वैद्यदेव कौन हैं? क्या मेरे ही राज्य के नागरिक हैं?"

"महाराज, यह बात मैं नहीं जानता। वे मेरे पीछे रवाना हो यहीं पर आ रहे हैं।" सर्पनख ने कहा।

"सिद्ध साधक! क्या तुम उस वैद्यदेव से परिचित हो?" राजा कनकाक्ष ने पूछा। सिद्ध साधक थोड़ी देर सोचता रहा कि यह रहस्य खोला जाय या नहीं, फिर बोला–"महाराज! उस वैद्यदेव के संबंध में माया सरोवर में परम शत्रु बनकर निवास करनेवाले जलवृक राक्षस तथा माया सरोवरेश्वर के अनुचरों से अज्ञात एक छोटा रहस्य है। वे भी जयशील की भांति अमरावती नगर के निवासी हैं।"

"क्या कहा? जयशील अमरावती नगर का निवासी है? उस देश का राजा रुद्रसेन मेरा जानी दुश्मन है। मुझे भेदियों द्वारा विश्वस्त रूप से मालूम हो गया है कि मुझे कठिनाइयों में फंसे देख वह मेरे राज्य पर हमला करने के प्रयत्न कर रहा है।" राजा कनकाक्ष ने क्रोध भरे स्वर में कहा।

"महाराज! आप जयशील की ईमानदारी पर शंका न कीजिए। चाहे वह किसी भी देश का नागरिक क्यों न हो? युवराजा तथा युवरानी को लाकर आप के हाथ सौंपने का जो वचन दिया है, उसे पूरा करने का अवश्य प्रयत्न करेंगे। आप के देश के नागरिक के रूप में मैं आप को वचन देता हूँ।" सिद्ध साधक ने समझाया।

सिद्ध साधक यों समझा रहा था, तभी थोड़ी दूर पर स्थित नर भक्षियों के दल में कोलाहल शुरू हो गया। वह इसका कारण जानने के ख्याल से इधर-उधर देख ही रहा था, तभी नर भक्षियों का

नेता शेरसिंह और गणाचारि उसके पास दौड़े-दौड़े आये और बोले–"साहब! आप जैसे चार आदमी दस-बारह जलवृक राक्षसों के साथ लड़ रहे हैं! क्या हम आप की मदद करें? हमें भी तो थोड़ा आहार मिल जाएगा।"

इसके दूसरे ही क्षण सर्पनख अपने घोड़े पर उछलकर बैठ गया, तब बोला–"सिद्ध साधक! वे लोग और कोई नहीं, वैद्यदेव, मेरा छोटा भाई, हंसों के रथ का सारथी राजा का अंगरक्षक है।" यों कहकर वह उसी वक़्त चल पड़ा।

"जय, महाकाल की!" चिल्लाते सिद्ध साधक नर वानर के कंधों पर उछलकर बैठ गया, तब राजा कनकाक्ष से बोला–"महाराज! सबसे पहले हमें उन जल राक्षसों से हमारे आदमियों को बचाना है।" यो कहकर उसने भी सर्पनख का अनुसरण किया।

"हे अरण्यदेव! आप ही हमारी भूख मिटा ले।" यों चिल्लाते नर भक्षियों का दल उनके पीछे दौड़ पड़ा।

सर्पनख और सिद्ध साधक जब वहाँ पहुँचे, तब घोड़े पर सवार हो सर्पस्वर जलवृकों के साथ लड़ते अपनी तलवार से उन्हें काटने जा रहा था। मगर जलवृक उस वार से बचकर वैद्यदेव कहे जानेवाले देवशर्मा, हंसों के रथ का सारथी तथा लंगड़े मंगलवर्मा को भी प्राणों के साथ बन्दी बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। मगर देवशर्मा अपनी हीरे जड़ित छड़ी से रोकते हुए उन्हें सावधान कर रहा था–"अरे मूर्खो, सावधान! इस छड़ी के छोर पर स्थित कांटा ज़हर से बुझा है। तुम्हारे शरीरों को छुआ दिया तो बस मिनटों में मर जाओगे।"

इस बीच वहाँ पर सिद्ध साधक और सर्पनख भी पहुँचे। दूर से कोलाहल करते नर भक्षी और राजा कनकाक्ष के सैनिक भी उसी ओर बढ़े चले आ रहे थे। उन्हें देख जलवृक राक्षस भागने की कोशिश में

थे, तब उनका नेता चिल्लाकर आदेश देने लगा–"ठहर जाओ! हमारे राजा का आदेश है कि अगर हम उन्हें प्राणों के साथ पकड़ न पाये तो मारकर ही लौट जावे।" यों कहकर पत्थरवाले गदे से देवशर्मा पर प्रहार करने को हुआ।

देवशर्मा एक क़दम पीछे हट गया, और बोला–"तुम्हारी मौत निकट आ गई है। मैं उसे कैसे रोक सकता हूँ?" इन शब्दों के साथ उसके शरीर से देवशर्मा ने अपनी छड़ी छुआ दी। दूसरे ही क्षण राक्षसों का नेता चीख़कर नीचे गिर पड़ा और छटपटाने लगा।

इस पर देवशर्मा अपनी छड़ी ऊपर उठाकर बोला–"अरे बचे हुए जलवृक राक्षसो! मैं तुम लोगों को आख़िरी बार चेतावनी देता हूँ! सरोवर में रहनेवाले माया सरोवरेश्वर की पुत्री पद्ममुखी तथा राजकुमार कांचनवर्मा की तुमने कोई हानि करने की कोशिश की तो तुम्हारे राजा के साथ तुम सब के प्राण ले लूँगा। ख़बरदार! जाकर अपने राजा से कह दो!" इस पर जलवृक राक्षस हाहाकार मचाते जंगल से होकर भाग खड़े हुए। तब सर्पनख देवशर्मा के निकट जाकर घोड़े पर से उतर पड़ा, तब बोला–"वैद्यदेव! माया सरोवर, कांचनमाला, और जयशील जलवृक राक्षसों के द्वारा होनेवाले ख़तरे की बात न जानने के कारण वे लोग सरोवर की ओर जा रहे हैं। क्या उन्हें सावधान नहीं करना है?"

"यह काम तुम दोनों भाइयों तथा हंसों के रथ का सारथी माया सरोवरेश्वर के अंगरक्षक को करना है, जल्दी चले जाओ।" देवशर्मा ने आदेश दिया।

इस पर सर्पनख और सर्पस्वर जलाश्वों को हांककर तेजी के साथ दौड़ाने लगे। अंगरक्षक निकट के पेड़ों की ओट में जाकर मिनटों में हंसों के रथ को आसमान में उड़ा ले गया। नर भक्षी उत्साह में कोलाहल करते भागनेवाले जलवृक राक्षसों का पीछा करने लगे। (और है)

अद्भुत ज्योतिषी

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया।

पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, यह बात स्पष्ट मालूम हो रही है कि आप मानव के प्रयत्न के प्रति अपार विश्वास रखते हैं, लेकिन देवता के निर्णय अचूक होते हैं। इस बात को साबित करने के लिए मैं आप को एक अद्भुत ज्योतिषी का वृत्तांत सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: बसंत देश का राजा महान वीर है। गद्दी पर बैठते ही उसे पड़ोसी देश हेमंत राज्य के साथ युद्ध करना पड़ा। उस युद्ध में उसे विजय प्राप्त हुई। इस कारण वसंत-देश का राजा गद्दी पर बैठते ही दो देशों का राजा बना।

बेताल कथाएं

युद्ध में वसंत देश के राजा को विजय तो हाथ लगी, मगर दोनों देशों में धन और प्रजा की अपार क्षति हुई। राजा तो महान वीर है। साथ ही विजय प्राप्त कर चुका है। इस कारण वह और राज्यों के साथ युद्ध करने को तैयार हो सकता है। इसकी कल्पना करके मंत्री डर गया। उसने दरबारी ज्योतिषी को बुलवाकर राजा की जन्मकुंडली देखने की आज्ञा दी।

"महामंत्री, हमारे राजा का दो ही राज्यों पर शासन करने का योग है। किसी कारणवश अगर उन्हें फिर से एक बार युद्ध करना पड़ा तो न केवल उनकी हार होगी, बल्कि उन्हें ये दोनों राज्यों से भी वंचित होना पड़ेगा।" ये शब्द ज्योतिषी ने मंत्री से इस प्रकार बताये जिससे राजा भी सुन सके।

इस पर राजा ने पूछा—"क्या मेरा सारा पराक्रम व्यर्थ ही हो जाएगा?"

"महाराज! युद्धों में विजय केवल राजा की वीरता और पराक्रम पर ही निर्भर नहीं होती, बल्कि सेनाओं का ठीक से संचालन होना चाहिए। उन्हें भी अपनी वीरता का प्रदर्शन करना होगा। कभी कभी एक गलत व्यूह-रचना के कारण विजय पराजय में बदल सकती है। इन सब से बढ़कर ईश्वर का अनुग्रह भी अनुकूल होना चाहिए। आप की जन्म-कुंडली में इसी का अभाव है।" ज्योतिषी ने समझाया।

"महाराज! आप का पराक्रम व्यर्थ क्यों जाय? आप हर साल युद्ध-विद्याओं के प्रदर्शनों का प्रबंध करके सभी देशों के लोगों को उन प्रतियोगिताओं के लिए निमंत्रित कीजिए। इस प्रकार आप नामी वीरों को पराजित कीजिए।" मंत्री ने सलाह दी।

राजा को यह सलाह पसंद आ गई। वे ऐसा ही करते रहें। प्रारंभ में अन्य देशों के राजा वसंत राजा के साथ युद्ध विद्याओं में हार गये। वे अपमान का अनुभव न करें, इस ख्याल से राजा उनका सम्मान करके भेजते रहें। अन्य राजा भी यह सोचकर संतुष्ट रहने लगे कि ऐसे बलवान राजा के साथ मैत्री बनाये रखना गर्व की बात है और साथ ही वे उनके साथ युद्ध करने की इच्छा नहीं रखते हैं।

कई साल बीत गये। इस बीच वसंत राजा के दरबारी ज्योतिषी का भाई शमंत राजा के दरबार में ज्योतिषी नियुक्त हुआ।

वसंत राजा के कोई संतान न थी। आखिर उन्हें एक पुत्री हुई। जब वह विवाह के योग्य हो गई, तब अनेक राजकुमार उसके साथ विवाह करने की कामना करने लगे। इसका कारण यह था कि एक तो वह रूपवती थी, साथ ही वह एक साथ दो राज्यों की वारिस थी।

शमंत राजा युवक था। वह भी वसंत देश की राजकुमारी के साथ शादी करना चाहता था; लेकिन वह दुर्बल था।

उसका राज्य भी छोटा था। इसलिए उसकी इच्छा की पूर्ति होने का बिलकुल अवकाश न था। मगर निराश होने के पहले उसने अपने ज्योतिषी की सलाह माँगी।

ज्योतिषी ने शमंत राजा की जन्मकुंडली देखकर बताया—" महाराज! आप की जन्म-कुंडली में एक साथ तीन राज्यों के राजा बनने का योग है। इसलिए आप वसंत राजा के पास इस बात का संदेशा भेज दीजिए कि वसंत राजा आप के साथ उनकी पुत्री का विवाह करें, ऐसा न करने पर युद्ध के लिए तैयार हो जायें! इसके बाद देखेंगे, क्या होता है?"

शमंत राजा ने वसंत राजा के पास इसी आशय की खबर भेज दी। वसंत राजा ने चुपचाप अपनी पुत्री का विवाह शमंत राजा के साथ कर दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन, वसंत राजा जैसे प्रतापी राजा ने अपने से दुर्बल शमंत राजा से डरकर उनके साथ अपनी कन्या का विवाह किया, क्या यह ईश्वरीय संयोग तो नहीं माना जाएगा? अथवा वृद्धावस्था के कारण वसंत राजा के मन में अपने पराक्रम के प्रति विश्वास जाता रहा है? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—" वसंत राजा का ज्योतिष के प्रति गहरा विश्वास था। इसीलिए वे शमंत राजा के साथ युद्ध के लिए तैयार नहीं हुए। उन्हें अपनी जन्म-कुंडली के प्रति अंध विश्वास था, इसी वजह से उन्होंने तीसरे राज्य को जीतने का प्रयत्न नहीं किया। मगर शमंत राजा के दरबारी ज्योतिषी यह रहस्य जानता था। इसी वजह से उसने शमंत राजा को ऐसी सलाह दी। इसमें ईश्वरीय संयोग की बात बिलकुल नहीं है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

भातृ प्रेम

एक राजा के यहाँ कुछ गुलाम काम किया करते थे। एक बार खजाने का धन ज्यादा ख़र्च हो गया। इसलिए राजा ने उसकी पूर्ति करने के ख्याल से गुलामों से कहा–"तुम लोग मेहनत करके धन कामा कर एक–एक हज़ार के हिसाब से रुपये मुझे दोगे तो तुम्हें मुक्त कर दूंगा।"

गुलामों में दो भाई भी थे। छोटा कमज़ोर था। बड़ा भाई बलवान था। उसने मेहनत करके एक हज़ार रुपये कमाये, राजा के हाथ सौंपते हुए कहा – "महाराज, आप ये रुपये लेकर मेरे छोटे भाई को मुक्त कर दीजिए।"

"तुम ने मेहनत करके जो धन कमाया, उसे तुम अपने छोटे भाई को मुक्त करने के पीछे क्यों ख़र्च करते हो ?" राजा ने पूछा।

"महाराज ! मेरा छोटा भाई कमज़ोर है। वह मेहनत नहीं कर पायेगा। मैं ज्यादा मेहनत करके अपने को मुक्त कर सकता हूँ। अगर मैं पहले मुक्त हो जाऊँगा तो मेरे छोटे भाई की मदद कौन करेगा ?" बड़े ने कहा। राजा उसके भातृप्रेम को देख खुश हुआ और उसने धन लिये बिना दोनों भाइयों को मुक्त किया।
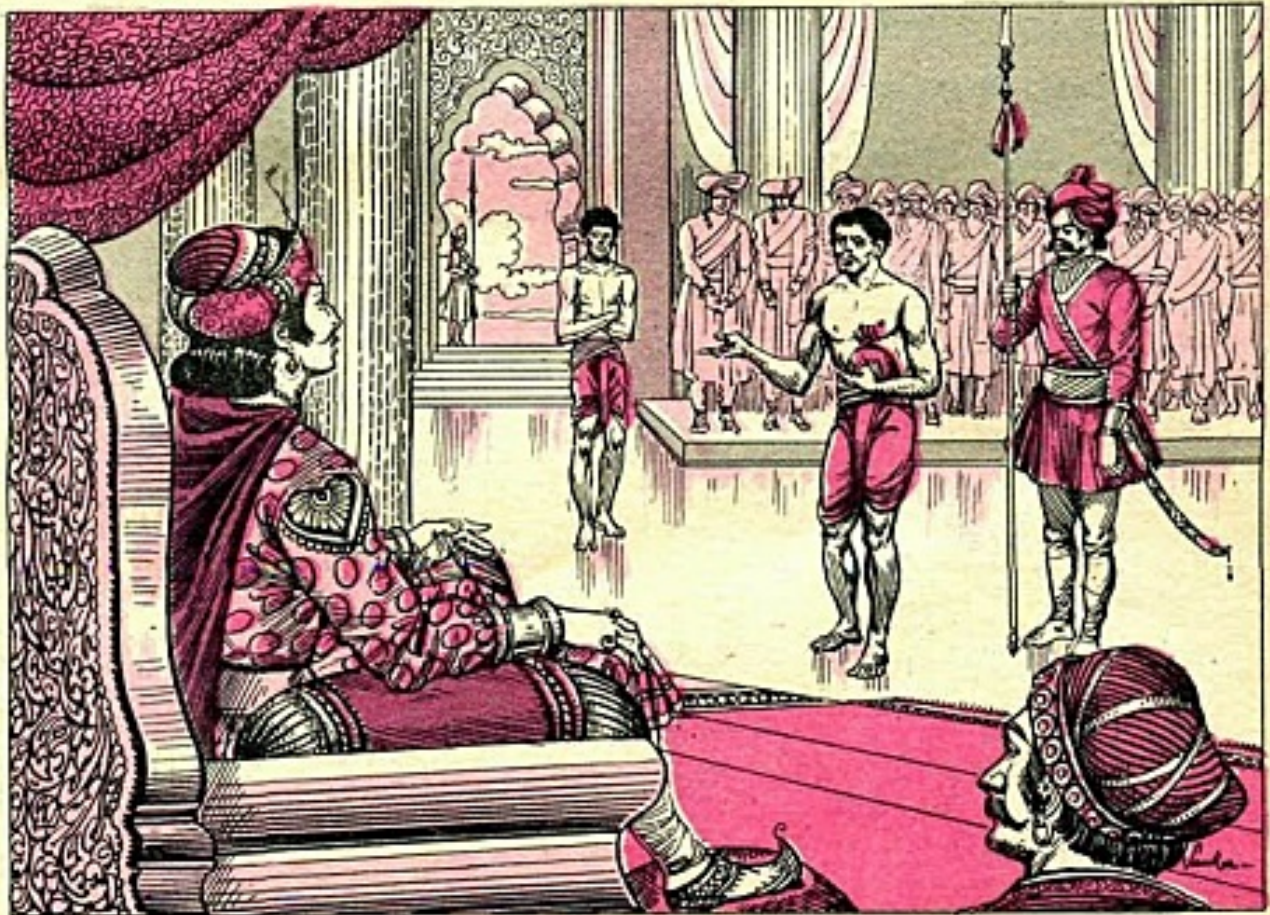
जब देवी बोल उठी!

श्रीपुर एक संपन्न गाँव था। उस गाँव में धन और धान्य का अभाव न था। गाँव का प्रमुख व्यक्ति राव बहादूर जमीन्दार था। गाँव भर में उसी की तूती बोलती थी। किसी के भी घर में कोई समस्या उत्पन्न हो जाती तो जमींदार ही उसे हल कर देता था। गाँववाले अशिक्षित थे। इस कारण उस गाँव को जो भी सुविधा प्राप्त हुई, उसके जिम्मेवार जमीन्दार को ही मानना पड़ेगा।

इस प्रकार गाँव को जो सुविधाएँ प्राप्त हुईं, उनमें माता का मंदिर एक है। उस मंदिर के निर्माण में प्रत्येक ग्रामवासी का धन थोड़ा-बहुत लगा हुआ है। ग्रामवासी हर साल जो चन्दा देते हैं, उसके द्वारा लगभग एक लाख रुपयों के मूल्य के गहने तैयार हुए। जिस दिन माता को इन गहनों से अलंकृत किया जाता था, उस दिन दूर-दूर के गाँवों से लोग माता के दर्शन के लिए उमड़ पड़ते थे। जमीन्दार की कृपा कहिए कि उस प्रदेश में ऐसा बड़ा मंदिर दूसरा कोई न था। मंदिर के भीतर गहनों की कोठरी थी, इस वजह से मंदिर के किवाड़ों पर ज़बर्दस्त ताला लगता था। उसकी चाभी मंदिर के खोलते वक़्त पुजारी के हाथ होती और बाक़ी समयों में जमीन्दार के हाथ। उस मंदिर के कारण जमीन्दार का यश चारों तरफ़ फैल गया।

अचानक एक दिन रात को माताजी के गहने गायब हो गये। मंदिर के किवाड़ खोलते ही पुजारी को इस बात का पता लगा और पुजारी ने जामीन्दार को यह खबर दी, पर जमीन्दार अपनी शाल तक ओढ़े बिना मंदिर की ओर दौड़ पड़ा।

थोड़ी ही देर में गाँव भर में यह खबर फैल गई। गाँव के सभी लोग मंदिर के

कमला निगम

पास इकट्ठे हो गये। सबके चेहरे पर मायसी छाई हुई थी। सबने बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ चन्दा डालकर माता के लिए गहने बनवाये थे। करीब लाख रुपये के क़ीमती गहनों की चोरी जाना मामूली बात न थी। जमीन्दार और पुजारी को छोड़ कोई तीसरा व्यक्ति उन गहनों को छू तक नहीं सकता था। यदि कोई कहे कि उन दोनों ने गहनों की चोरी की है तो उस गाँव के मनुष्य क्या, पत्थर तक यकीन नहीं करते।

जमीन्दार भीड़ को चीरते हुए माताजी की मूर्ति के सामने पहुँचा। हाथ जोड़कर बोला—"माताजी! हमने कौन सा पाप किया था जिससे यह अनर्थ हो गया है? आप ही बताइये, यह चोरी करनेवाला कौन है? मैं आप के सामने उसकी बलि देता हूँ?"

माता की मूर्ति में से ये बातें सुनाई दीं—"हे भक्त! मेरे गहनों की चोरी करनेवाला तुम लोगों के बीच में ही है। वह धोबी सुंदर सिंह है। मगर उसकी कोई हानि मत करो, वह भोला है।"

धोबी सुंदर सिंह का नाम सुनते ही सब लोग आग बबूले हो उठे। इसके पहले वह छोटी-मोटी चोरियाँ करके पिट चुका था। मगर क्या वह देवी के गहनों की चोरी करेगा? फिर क्या था, उसी वक़्त धोबी सुंदर सिंह को लोग घसीटते ले आये। उसने घबड़ाकर कहा—"बाबूजी, चोरी की बाबत मैं कुछ नहीं जानता।"

जमीन्दार ने उसकी गर्दन पकड़कर पूछा—"अबे, देवीजी कुछ नहीं कहेंगी। ऐसी दयालू माता के गहनों को तुम चुराने की हिम्मत कैसे कर सके? बताओ, कहाँ पर तुमने गहने छिपा रखे हैं?"

कई तरह से सुंदर सिंह को समझाया गया, मगर उसने चोरी की बात नहीं मांनी। आख़िर तंग आकर जमीन्दार ने उसे मंदिर के अंदर ढकेल दिया और
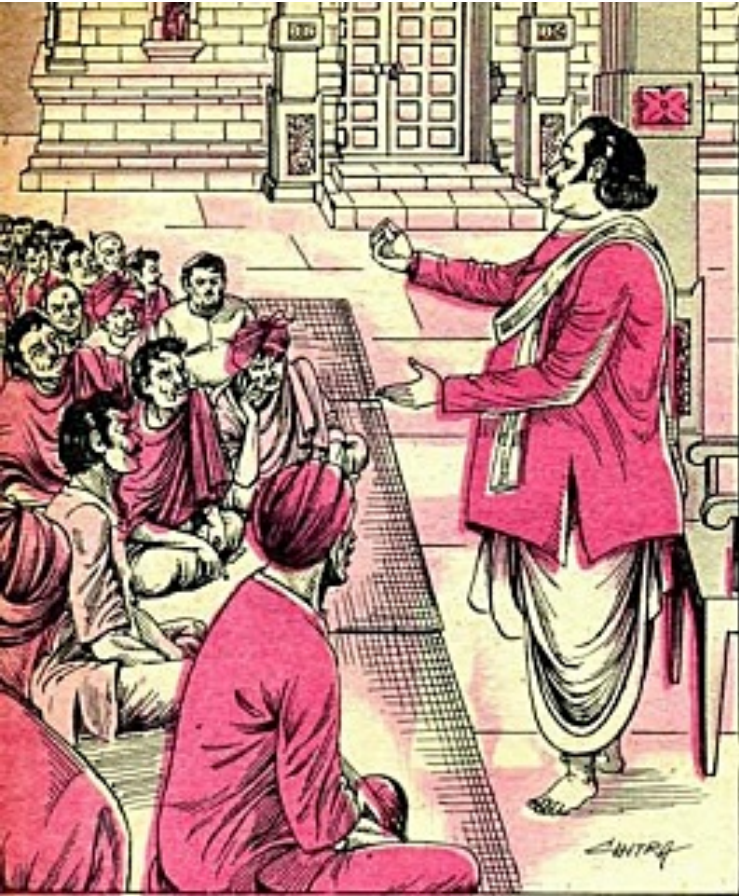
कहा—"तुम भली भांति सोच-समझकर जवाब दो। माताजी क्रोध में आयेंगी तो तुम खून उगलकर मर जाओगे।" यों सुंदर सिंह को चेतावनी दे जमीन्दार ने मंदिर के किवाड़ों पर ताला लगाया।

दूसरे दिन जमीन्दार ने प्रवेश करके मंदिर के द्वार खोल दिये, देखता क्या है, सुंदर सिंह खून से लतपत हो गिरा पड़ा है। लोगों ने सोचा कि सुंदर सिंह के द्वारा गहनों की चोरी की खबर मालूम हो जाएगी, मगर उन्हें निराश होना पड़ा।

इसके बाद लाश को मंदिर से बाहर निकालकर मंदिर को खूब साफ़ कराया गया और मंत्र जल छिड़काया गया।

थोड़े दिन बीत गये। तब जमीन्दार ने गाँववालों को इकट्ठा करके समझाया—"देखो भाइयो! चोरी गये गहने फिर से मिलने को नहीं, सुंदर के प्राण भी लौटकर नहीं आनेवाले हैं। रात को देवी ने मुझे दर्शन दिये। उनके कंठ और हाथों में एक भी गहना न देख मेरा दिल दहल उठा। देवी ने सपने में दर्शन देकर मुझसे पूछा—"बेटे, क्या तुम लोग मुझे ऐसे ही रखोगे? गहने बनाकर मुझे पहना दो।" सौ पत्थर डालने से टीला बन जाता है। क्यों, तुम लोगों की क्या राय है?"

इसके बाद सबने फिर से चन्दा देकर देवीजी के लिए गहने बनवाने का निर्णय किया। शीघ्र ही गहने तैयार हो गये। उत्सव और मेले उत्साहपूर्वक मनाये गये।

मगर एक साल पूरा होने के पहले फिर से देवी के गहनों की चोरी हो गई। गाँव भर में हल्ला मच गया। ग्रामवासी यह सोचते मंदिर के पास पहुँचे कि अब गाँव के विनाश के दिन निकट आ गये हैं और किसी की जान पर आफ़त आ गई है।

जमीन्दार ने देवीजी के सामने हाथ जोड़कर कहा—"माताजी, हम लोग इस बार भी आप के गहनों को बचा न पाये। आप क्यों इस तरह हमें दण्ड दे रही हैं?

इस बार यह दुष्ट कार्य करनेवाला बदमाश कौन है? कृपा करके बताइये।"

पर देवीजी मौन रह गईं।

इस पर जमीन्दार ने आत्महत्या करने का निश्चय कर कमर में से कटार निकाली और अपनी छाती में भोंकने को हुआ। सब लोग हाहाकार कर उठे। तब मूर्ति के भीतर से ये शब्द सुनाई दिये।

"तुम आत्महत्या मत करो! मैं इस गाँव से खुद जाना चाहती हूँ। तुम लोगों के बीच दुष्ट लोग हैं, इस बार गहने चुरानेवाला धोबी मंगल दास है।"

मंगल दास का नाम सुनते ही कुछ लोग उसकी खोज में दौड़ पड़े।

जमीन्दार ने लोगों को समझाया– "तुम लोग मंगल दास को दण्ड मत दो। इस बार वह गहनों का पता बताये बिना मर नहीं सकता। क्या हम लोग फिर से एक लाख रुपये क़ीमती गहने बना सकते हैं?"

मगर जमीन्दार के विचार के अनुसार नहीं हुआ। मंगल दास की खोज में गये हुए लोग लौटकर बोले कि पिछली रात को ही उसकी हत्या हो गई है।

यह बात सुनने पर जमीन्दार एक दम हताश हो गया। वह बेहोश हो गया।

उसके उपचार किये गये, फिर वह होश में नहीं आया। आखिर जब लोगों ने यह मनौती की कि फिर से चन्दा वसूल करके देवीजी के लिए गहने बनवा लेंगे, तब जाकर उसकी बेहोशी टूट गई।

लोगों की मनौती की बात सुनकर जमीन्दार उन्हें डांटते हुए बोला–"क्या तुम लोग पागल तो नहीं हुए हो? मुझ अकेले के प्राणों के वास्ते तुम लोग यह भारी बोझ अपने ऊपर क्यों लेते हो?"

"जमीन्दार साहब! आप यह क्या कह रहे हैं? आप खैरियत से रहेंगे, तभी तो हमारे घर-बार खुशहाल रहेंगे।" गाँववालों ने एक स्वर में बताया।

देवीजी के लिए तीसरी बार गहने बनाये गये। मगर इस बात का विश्वास किसी को न रहा कि उन गहनों की चोरी न होगी।

पुजारी की पुत्री वाणी बड़ी चतुर थी। उसने भांप लिया कि देवीजी का बोलना असम्भव है, चोरी के मामले में कोई धोखा धड़ी है। उसकी शंका इस बात से और दृढ़ हो गई कि गहनों की चोरी के बाद चोर कहे जानेवालों की हत्याएँ होती जा रही हैं। कोई देवी की आड़ में यह सब नाटक रच रहा है। वाणी ने जब यह बात कही, तब पुजारी ने इस पर विश्वास नहीं किया। क्योंकि देवीजी के प्रति उसका अपार विश्वास था। उन्हीं दिनों में गोविंद अपने कुत्ते के साथ उस गाँव में आ पहुँचा। गाँव के कुछ लोग इसके पूर्व ही गोविंद का नाम सुन चुके थे, इसलिए उन लोगों ने गोविंद का स्वागत किया।

गोविंद ने सीधे जाकर मंदिर में अपना डेरा डाला। वाणी ने भी गोविंद का नाम सुन रखा था। इसलिए उसने गोविंद के पास जाकर सारा वृत्तांत कह सुनाया। तब कहा–"भाई साहब, तुम इस बार ऐसा यत्न करो जिससे गहनों की चोरी न हो जाय, साथ ही असली चोर का भी पता लगे; वरना फिर से गहनों की चोरी के साथ एक भोले आदमी की जान भी चली जाएगी।"

गोविंद ने थोड़ी देर सोचकर पूछा– "मंदिर की चाभियाँ किसके पास हैं?"

"मेरे पिताजी रोज़ संध्या को देवीजी का दीपाराधन कर ताला बंद करते हैं और चाभियाँ जमीन्दार के हाथ सौंप देते हैं।" वाणी ने जवाब दिया।

"तो सुनो, आज तुम दीपाराधन करो, सारे गहने छिपा दो, यह काम ऐसा करो जिससे तुम्हारे पिताजी को भी इस पर संदेह न हो जाय! बाक़ी काम मैं देख लूंगा।" गोविंद ने अपनी योजना सुनाई।

उस दिन वाणी दीपाराधन करने की अपनी इच्छा बताकर चाभियाँ ले मंदिर में पहुँची, हांफते हुए लौटकर अपने पिता से बोली–"पिताजी, देवी के गहने गायब हैं।"

पुजारी घबड़ाकर मंदिर पहुँचा। देवीजी के गहने न पाकर जमीन्दार के घर दौड़ पड़ा और उसे यह ख़बर दी। फिर क्या था, जमीन्दार की आँखें अंगारे बन गईं। उसने मंदिर जाकर देखा, गहने सचमच गायब थे।

उसने पुजारी की ओर तीक्ष्ण दृष्टि डालकर पूछा–"पुजारीजी! दिन दहाड़े गहने गायब हो गये हैं तो इसका पता तुम्हें कैसे नहीं लगा?" ये शब्द सुनकर पुजारी अवाक़ रह गया।

कुछ ही मिनटों में यह ख़बर सारे गाँव में आग की तरह फैल गई। न मालूम आज किसकी जान पर आ पड़ी है? चोरी करनेवाला मरता जा रहा है, फिर भी चोरी चालू है। यह कैसी हिम्मत है? देवी के साथ कोई मज़ाक कर रहा है।

दूसरे दिन सवेरे लोग मंदिर के पास जमा हुए। जमीन्दार ने देवीजी से प्रार्थना की कि चोर का नाम बतला दे। देवी यों बोल उठीं

"आइंदा मैं कोई जवाब नहीं दूंगी। तुम लोगों में बड़े दुष्ट हैं। अब तुम लोग

मुझे यह वचन दो कि आइंदा तुम लोग मेरे वास्ते गहने नहीं बनायेंगे, तभी मैं चोर का नाम बताऊँगी।"

सब ने देवी की बात मान ली; देवी बोली–"इस बार दिन दहाड़े गहनों की चोरी करनेवाला व्यक्ति कुम्हार राम सहाय है।"

उसी वक़्त कुछ लोग दौड़ पड़े और कुम्हार राम सहाय को घसीट लाये। भीड़ में उपस्थित गोविंद चिल्लाकर बोला–"तुम लोग ठहर जाओ। इस बार न मालूम क्यों देवी झूठ बोली हैं। मैं असली रहस्य का पता लगाता हूँ।" यों कहकर वह देवी की मूर्ति की ओर देख बोला–"देवीजी! सावधानी से सोच-

समझकर जवाब दो! क्या सचमुच राम सहाय ने ही तुम्हारे गहनों की चोरी की है?"

मूर्ति की ओर से क्रोध भरी आवाज़ में ये शब्द सुनाई दिये—"कौन है वह? मुझ पर ही संदेह करता है? पहले उसे सजा दो।"

दूसरे क्षण लोग गोविंद की ओर टूट पड़े। वाणी ने उन्हें रोका और कहा—"देवीजी ने झूठ बताया है। गहने तो मेरे पास हैं। मैंने ही गहने निकाले हैं।" इन शब्दों के साथ वाणी ने गहनों की थैली खोलकर वहाँ पर रख दी।

इस पर सब लोग चकित रह गये। सब लोग यह सोचते एक दूसरे का मुँह ताकने लगे कि देवीजी क्यों झूठ बोली हैं। गोविंद ने कहा—"इस तरह झूठ बोलनेवाली देवियों को मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। इस देवी को मैं प्रत्यक्ष रूप से दिखा सकता हूँ।" इन शब्दों के साथ गोविंद ने अपने कुत्ते को मूर्ति की ओर उकसाया। कुत्ता जाकर मूर्ति के पीछे के व्यक्ति को बाहर खींच लाया। वह जमीन्दार के नौकर की पत्नी थी।

सबने उसे धमकाया कि सच न बोलेगी तो उसे मार डालेंगे। इस पर उसने सच्ची बात बताई कि हर बार जमीन्दार ही गहने हड़प रहे हैं और उसे मूर्ति के पीछे रहकर ये बातें बताने की धमकी देते हैं।

इस बीच जमीन्दार वहाँ से खिसक गया। गोविंद भीड़ को ढकेलते जमीन्दार के घर पहुँचा। तब तक वह देवी के सारे गहने उठाकर भागने की कोशिश में था।

कुत्ते की मदद से गोविंद ने जमीन्दार के हाथ से सारे गहने खींच लिये और उसे गाँव से भाग जाने दिया। इस पर गाँववालों ने गोविंद के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। तब गोविंद अपने कुत्ते को साथ ले दूसरे गाँव की ओर चल पड़ा।

दाँव

एक राजा में दाँव लगाने की लत थी। रोज दरबार में पहुँचते ही राजा कहा करते थे कि आज मेरे साथ दाँव लगाने वाला व्यक्ति उठकर खड़े हो जाय !

एक दिन राजा ने दरबार में प्रवेश करते ही यही बात कही। इस पर एक युवक उठकर बोला – "महाराज, मैं दाँव लगाता हूँ। उस में चाहे आप हार जाय या मैं हार जाऊँ ! एक सौ सोने की मुद्राएँ देनी होगी।"

राजा ने युवक की शर्त मान ली।

"आप के दायें हाथ की कनिष्टिका उँगली की अंगूठी के नीचे बहुत बड़ा तिल है। चाहे तो आप उसे निकाल कर देख लीजिए।" युवक ने कहा।

राजा ने अंगूठी निकाल कर देखा, पर तिल न था। युवक राजा के हाथ सौ सोने की मुद्राएँ सौंप कर जाने लगा, इस पर दरबार में हाहाकार मच गया। राजा ने पता लगाया तो मालूम हुआ कि दरबारियों ने युवक के साथ दस हज़ार सोने की मुद्राओं का दाँव लगाया था। युवक ने कहा था कि वह राजा के दायें हाथ की कनिष्टिका की अंगूठी निकलवा देगा। अब वह दाँव जीत चुका था !
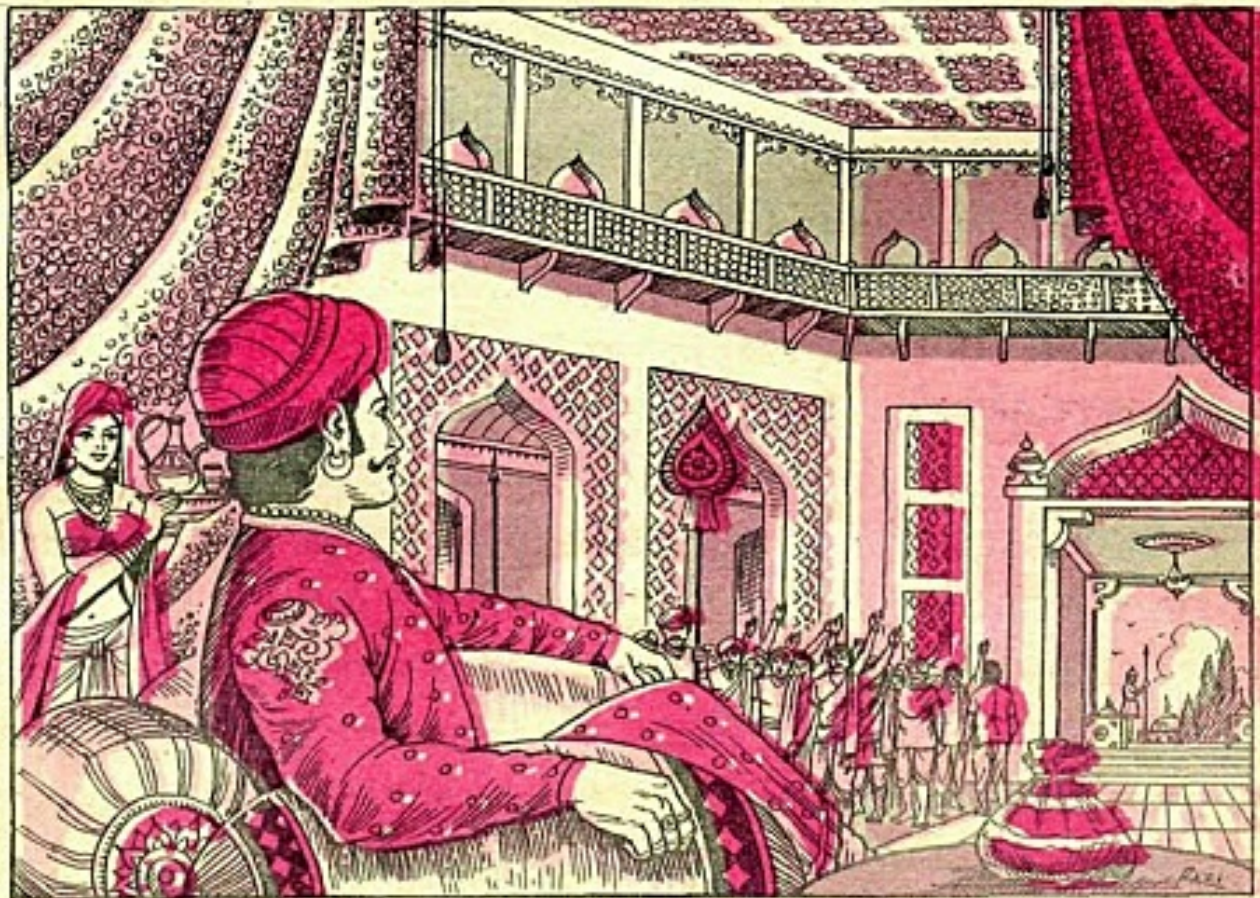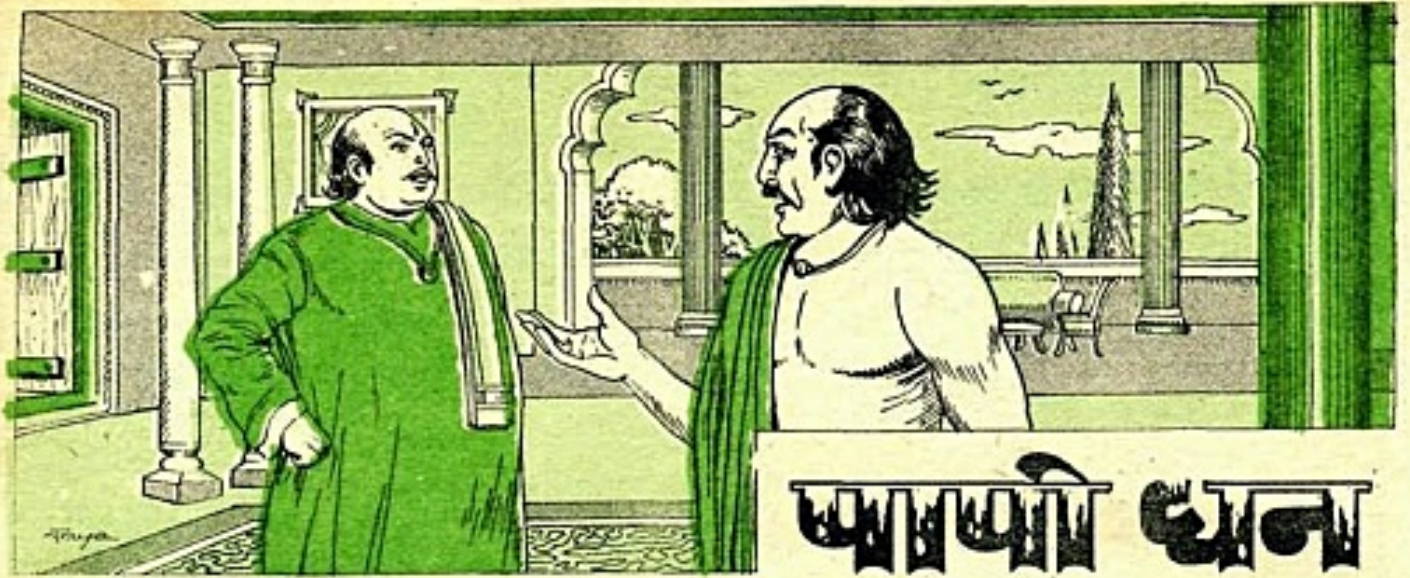
पापी धन

दीनू महतो की कमाई उसका परिवार चलाने को बड़ी मुश्किल से पर्याप्त थी, लेकिन उस के दोस्त मगन लाल ने व्यापार में काफी धन कमा कर बड़ा मकान भी बनवा लिया था। फ़ुरसत के वक़्त दीनू महतो मगन लाल के घर जाकर गपशप करके लौटता था।

एक दिन जब दीनू महतो मगनलाल के घर पहुँचा, तब मगनलाल ने उसे एक ख़बर सुनाई। उन दोनों का एक और मित्र था श्यामलाल। उसकी दूकान और घर अचानक जल जाने से वह एकदम भिखारी बन गया था। यह ख़बर सुनते ही दीनू महतो का दिल कांप उठा। श्यामलाल व्यापार के काम से शहर में अपना स्थिर निवास बना कर बचपन के अपने दोस्तों से दूर हो गया था। फिर भी उसके बीच दोस्ती थी। इस लिए दीनू बोला – "ओह, कैसा अनर्थ हो गया है! चलो, श्यामलाल को देख आयेंगे!"

मगनलाल हंसकर बोला–"वाह, तुम भी कैसे भोले हो! इस हालत में हम श्यामलाल को देखने जायेंगे तो क्या वह हम से रुपये मांग न बैठेगा?"

दीनू ये शब्द सुनकर चकित रह गया। उसने आवेश में आकर कहा–"धन तो पापी होता है! दोस्ती पवित्र होती है। इन दोनों की तुलना कैसे हो सकती है?"

"तुम्हारे पास धन नहीं है। इसलिए तुम जो भी उपदेश दे सकते हो! मैं नहीं चलता। चाहे तो तुम चले जाओ!" मगनलाल ने साफ़ कह दिया।

तब तक अंधेरा हो चला था। फिर भी दीनू से रह न गया। वह उसी वक़्त शहर की ओर चल पड़ा। रात भर चलने पर वह सुबह तक शहर पहुँच सकता था।

मगर आधी रात के होते–होते आंधी-वर्षा शुरू हो गई। क़िस्मत की बात थी कि

शंकर सिंह

तब तक दीनू एक गाँव के समीप पहुँच चुका था। वह पानी में भीग कर एक घर के सामने पहुँचा, उसने दर्वाजा खट खटाया।

बड़ी देर बाद एक बूढ़ी ने खिड़की में से झांक कर देखा और पूछा–"कौन हो तुम?"

"नानी जी, मैं शहर जा रहा हूँ। रास्ते में पानी बरसने लगा। सवेरे तक मुझे आश्रय दो। दर्वाजा खोलो। सुबह के होते ही चला जाऊँगा।" दीनू ने जवाब दिया।

"मेरे बेटे-बहू गाँव चले गये हैं। मैं अकेली हूँ। वे यह बता गये हैं कि कोई भी आ जावे, दर्वाजा मत खोलो। लेकिन बेचारे तुम पानी में भीग रहे हो! ठहरो, किवाड़ खोल देती हूँ।" बूढ़ी ने कहा।

मगर बूढ़ी किवाड़ खोले बिना वापस चली गई। इस पर दीनू पिछवाड़े की ओर जाकर बूढ़ी पर निगरानी करने लगा। उसने खिड़की में से देखा, बूढ़ी ने पेटी में से बहुत-सा धन निकाला, थैली में डालकर ऊपर इमली ढ़क दी। थैली को एक खूँटे पर लटका कर पेटी बंद की।

इसके बाद बूढ़ी किवाड़ खोलने आई, तब तक दीनू किवाड़ के पा पहुँचकर खड़ा हो गया। बूढ़ी ने किवाड़ खोलकर दीनू को सूखे कपड़े दिये। आगे के कमरे में दीनू के सोने के वास्ते खाट डाल दी।

दीनू लेट तो गया, मगर उसे नींद नहीं आई। वह सोचने लगा–बूढ़ी के धन से श्यामलाल अपना व्यापार फिर से चालू कर सकता है। इस के बाद वह जल्दी ही बूढ़ी का धन ब्याज के साथ चुका सकता है।

तब तक बूढ़ी खुर्राटे लेकर सो रही थी। बाहर वर्षा भी थम गई थी। दीनू खाट से उठ बैठा। धन की थैली कंधे पर लटकाकर शहर की ओर चल पड़ा।

सवेरे तक वह श्यालाल के घर पहुँचा। उसका घर जलकर राख हो चुका था। दीनू आँखों में आँसू भरकर श्यामलाल को सांत्वना देने लागा, पर श्यामलाल ने धन के प्रति विरक्ति प्रकट की।

दीनू ने थैली में से धन निकाल कर श्यामलाल के आगे डाल दिया और समझाया–" दोस्त, तुम इस धन से फिर अपना व्यापार शुरू करो ।"

" दीनू ! यह धन तुम्हारा नहीं है । मैं यह भी नहीं समझता कि मुझे सांत्वना देने तक न आनेवाले मगनलाल ने इसे भेजा होगा ! सच बताओ, तुम्हें यह धन कैसे मिला है ? " श्यामलाल ने ज़ोर देकर पूछा !

दीनू ने कहा–" दोस्त ! तुम संकोच मत करो ! छे महीने के अन्दर बूढ़ी का धन दुगुना वापस किया जा सकता है !"

श्यामलाल ने समझाया–" दीनू ! मेरे प्रति तुम्हारी जो सहानुभूति है, उसे देख मैं गर्व से फूला नहीं समाता हूँ, लेकिन मैं यह धन स्वीकार नहीं कर सकता। मेरा सारा व्यापार धोखे से भरा है। इसलिए वह सब खो गया है। मैं इस वक़्त एक और व्यापारी के यहाँ नौकरी में लग गया हूँ। मेरी कमाई से मेरी गृहस्थी चल जाती है। धन तो पापी होता है ; वरना तुम जैसे सज्जन व्यक्ति को चोरी करने की प्रेरणा नहीं देता। तुम यह धन लेजाकर कृपया बूढ़ी को दे दो।"

दीनू यह जानकर संतुष्ट हुआ कि उस के मित्र श्यामलाल की हालत कोई खराब नहीं है। वह अपने गाँव की ओर चल पड़ा। रास्ते में जब बूढ़ी के घर पहुँचा तब वहाँ पर लोगों की बड़ी भीड़ लगी थी। बूढ़ी घर के बाहर चबूतरे पर बैठकर रो रही थी।

बूढ़ी की बहू कह रही थी–" तुम झूठ बोल रही हो ! भला, चोर को कैसे पता लग सकता था कि इमली वाली थैली में धन होगा ? अब यह बूढ़ी एक भी पल इस घर में नहीं रह सकती !"

बूढ़ी की यह बुरी हालत देख दीनू को दया आ गई। उसने धन की थैली बहू के हाथ देकर सारा किस्सा सुनाया, तब बहू ने बूढ़ी को घर के अन्दर आने दिया।

दीनू ने अपना घर लौटते हुए मन में सोचा–" हाँ, सचमुच यह पापी धन है !"
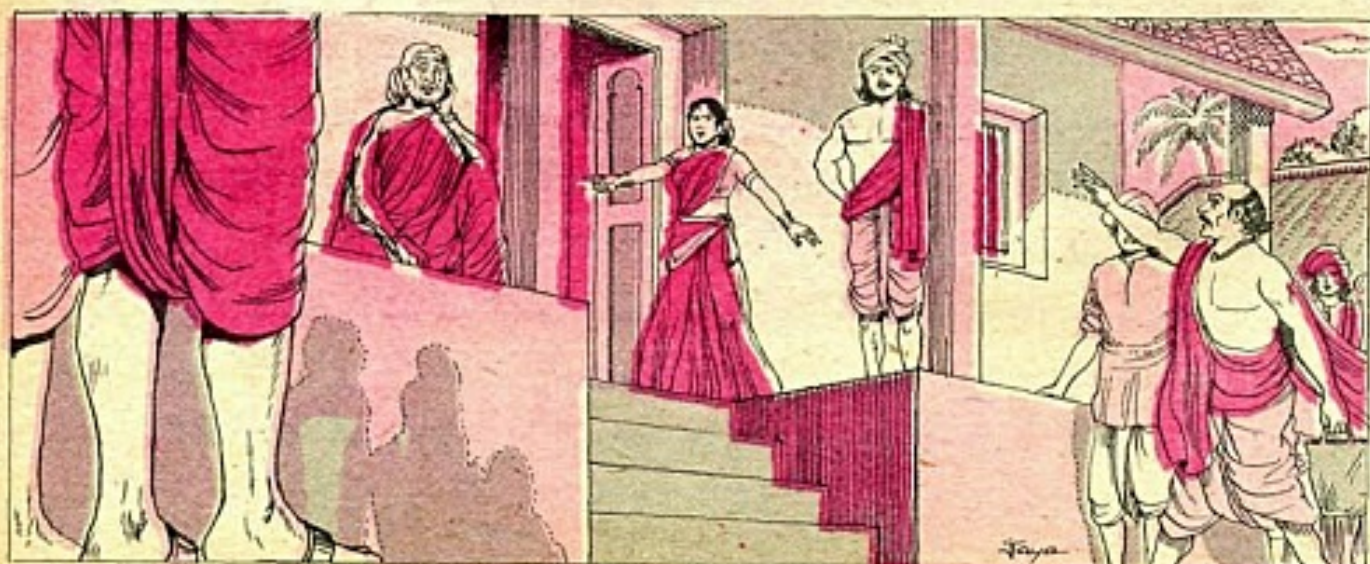
ईर्ष्या

कृष्णापुर में दो पंडित गुरुकुल चलाते थे। उन में प्रवर नामक पंडित बड़ी लगन और प्रेम के साथ अपने शिष्यों को पढ़ाता था और जहां तक हो सके शीघ्र शिक्षा पूरा करके उन्हें घर भेज देता था।

विदुर नामक दूसरा पंडित शिष्यों से कस कर काम कराता। पर उन्हें पढ़ाता कुछ न था। उसके शिष्यों की पढ़ाई बहुत समय तक पूरी न होती थी। इसलिए उसके पास विद्यर्थी पढ़ने जाते न थे।

इस पर विदुर प्रवर के प्रति ईर्ष्या से भर उठा, राजा के पास पहुँच कर शिकायत की कि प्रवर अपने शिष्यों से धन लेकर उनकी शिक्षा पूरी होने के पहले ही प्रमाण पत्र देकर भेज देते हैं। तब राजा ने दोनों को बुला भेजा।

प्रवर ने शिकायती पत्र पढ़ा, तुरंत एक घोड़ा गाड़ी पर सवार हो राजा की सेवा में पहुँचा। विदुर भी बड़े उत्साह के साथ बैल गाड़ी पर चल पड़ा।

गवाह से पहले अपराधी को आया देख राजा ने सुनवाई मुल्तवी करनी चाही। इस पर प्रवर बोला–"महाराज! पंडित विदुरजी, मैं–हम दोनों एक ही समय रवाना हुए, मगर वे बैल गाड़ी पर आ रहे हैं, मैं घोड़ा गाड़ी में आया हूँ। विद्यार्थियों की भी ठीक यही बात है। तेज विद्यार्थी पहले ही उत्तीर्ण होकर प्रमाण पत्र प्राप्त कर लेते हैं।"

राजा ने सच्ची बात भाँप ली। प्रवर को अपने राज गुरु नियुक्त किया और ईर्ष्या करनेवाले विदुर को दी जानेवाली आर्थिक सहायता बंद की।

दो खतरे

विश्वनाथपुर में रामगोपाल नामक एक छोटा-सा किसान बचपन में अपने पिता से वंचित हो गया। उस की माँ कामाक्षी ने ही उसे पाल-पोस कर बड़ा किया और जवान होने पर कमला नामक एक कन्या के साथ उसकी शादी की।

कमला जब ससुराल में आई, तब से कामाक्षी अपनी बहू को हर छोटी-सी बात को लेकर सताने लगी। रामगोपाल अपनी माँ से डरता था। लेकिन अपनी पत्नी को यातनाएँ झेलते देख कर भी वह चुप रहा। वह कमला को सांत्वना देने से भी डरता था। कमला की तक़लीफ़ों की अब कोई सीमा न रही।

उस हालत में रामगोपाल की बहन प्रसव के लिए पीहर आ पहुँची। वह भी अपनी माँ के साथ कमला को सताने लगी। अब कमला की हालत दूभर हो गई।

एक दिन कमला का भाई अपनी बहन को देखने आया। कमला की हालत समझ कर वह बड़ा दुखी हुआ। उसने सोचा कि किसी न किसी उपाय के द्वारा बहन की गृहस्थी को सुखमय बनाना चाहिए। उसने अपनी बहन को सांत्वना दी, उसकी सास के बारे में सारी जानकारी हासिल की, तब अपनी बहन को कोई उपाय बताकर चला गया।

इस घटना के दो दिन बाद एक ज्योतिषी कामाक्षी के घर की ओर से आ निकला। कामाक्षी का ज्योतिष के प्रति अपार विश्वास था। उसने ज्योतिषी को बुला भेजा और अपना भविष्य जानने को हाथ बढ़ाया।

ज्योतिषी ने बड़ी देर तक कामाक्षी की हस्त-रेखाओं की जांच की, तब वह चुपचाप चले जने को उठ खड़ा हुआ।

सुदर्शन नारंग

"सुनो भाई, कुछ बताये बिना चले क्यों जा रहे हो? तुम्हारी विद्या का मूल्य चुकाऊँगी! बताओ तो सही।" कामाक्षी ने उसे रोक कर पूछा।

"माताजी, क्षमा कीजिएगा। सच्ची बात बता कर मैं आपको दुखी बनाना नहीं चाहता।" ज्योतिषी बोला।

"कोई बात नहीं, बताओ! सच्ची बात कहने में संकोच क्यों करते हो?" कामाक्षी ने कहा।

"माताजी! तुम्हारी रेखाओं में दो खतरे हैं। पहल खतरे से तुम भले ही बच जाओ, लेकिन दूसरे खतरे से तुम बच नहीं सकती।" यों बताकर ज्योतिषी मौन रह गया।

'खतरे' की बात सुनकर कामाक्षी कांप उठी। फिर भी हिम्मत बटोर कर उन खतरों का परिचय देने पर ज़ोर दिया।

"तुम्हारी बेटी के गर्भ से पैदा होने वाले बच्चे के जरिये तुम्हें एक खतरा है। उस बच्चे की दस साल उम्र होने तक तुम उसका चेहरा न देखोगी तो वह खतरा टल जाएगा। लेकिन एक महीने के अन्दर तुम्हें साँप का एक खतरा है। नागवशीकरण मंत्र जानने वाला व्यक्ति एक महीने तक तुम्हारे वास्ते पूजा करे तो तुम उस खतरे मे बच सकती हो। अगले महीने ठीक इसी दिन तुम्हें साँप का खतरा है।" यों समझा कर ज्योतिषी चला गया।

जान के डर ने कामाक्षी को भूत की तरह पकड़ लिया। उसकी हालत पर

कमला को दया आ गई। वह बोली–"माँ, हम तो बड़े ही क़िस्मतवर हैं। मैं नाग-वशीकरणा मंत्र जानती हूँ। मैं महीने भर पूजाएँ करके तुम को साँप के ख़तरे से बचा लूँगी।"

फिर क्या था, अचानक कामाक्षी को उसकी बहू कमला तो देवी जैसी प्रतीत हुई।

"बेटी, तुमने लाख टके की बात कही। महीने भर नियमित रूप से पूजा करो। मुझे आज तक मालूम ही न था कि तुम नागवशीकरण मंत्र जानती हो। तुम्हारे मुंह से यह बात सुनते ही मुझे ऐसा लगा कि मेरी जान में जान आ गई हो!" यों कहकर कामाक्षी ने अपनी बहू के प्रति बड़ा वात्सल्य दिखाया।

अब कामाक्षी को पहले खतरे से बचना था। उसकी बेटी कमला आजकल में प्रसव देने वाली थी। फिर भी कामाक्षी ने निर्दयतापूर्वक अपनी बेटी को प्रसव के वास्ते ससुराल में भिजवा दिया। उसे जान का डर जाता रहा।

कमला महीने भर पूजाएँ करती रही। साथ ही घर के सारे काम-काज वही संभालती रही। कामाक्षी को बड़े ही आराम से रखा। वह अपनी बहू पर अब गर्व का अनुभव करने लगी। एक समय उसने बहू को खूब सताया था। यह बात भी वह भूल गई।

ज्योतिषी की बताई अवधि एक महीने की पूरी हो गई। आख़िरी दिन कामाक्षी जान हथेली पर रख कर चारपाई पर बैठी ही रह गई। बहू ने कई तरह से समझाया कि अब खतरा टल गया है, फिर भी वह दिन भर डरती ही रह गई।

उस दिन से कामाक्षी कमला को अपनी बेटी से कहीं अधिक मानने लगी। अपने भाई के द्वारा भेजे गये 'ज्योतिषी' की कृपा से कमला की यातनाएँ दूर हो गईं। दो खतरों वाले नाटक में अपने भाई के पात्र का परिचय जो था, उसकी सचाई कमला ने भूल कर भी कभी अपने पति के सामने प्रकट नहीं की।

आधा-आधा

एक यात्री एकादशी के दिन एक गाँव में पहुँचा। वहाँ पर जमीन्दार का आम का बाग देखा। आम पककर कटाई के लिए तैयार थे। यात्री एकादशी के दिन उपवास करके केवल फल खाया करता था। इसलिए जमीन्दार के पास जाकर फल माँगा।

जमीन्दार ने चिट लिखकर दिया कि तुम जितने फल चाहो, तोड़कर खा लो। चिट देख बगीचे के पहरेदार ने कहा–"तुम जितने फल तोड़ोगे, उनमें से आधे मुझे देना होगा।"

"अच्छी बात है, मगर जो जो फल तुम्हें देता हूँ, उन में से एक फल तुम्हें मुझे लौटाना होगा।" यात्री ने कहा।

पहरेदार ने मान लिया। यात्री ने बगीचे के माली के साथ भी ऐसा ही समझौता कर लिया। मगर यात्री ने सिर्फ़ दो ही फल तोड़े थे, इस कारण माली और पहरेदार को कुछ हाथ न लगा।

यात्री ने उन दोनों को एक एक फल दे दिया, उन्हें फिर वापस लेकर दोनों फल उसी ने खा डाले।

अतिथि-सत्कार

कृष्णकांत को एक बार अपने पड़ोसी गाँव में जाना पड़ा। उस वक़्त उसके पिता ने समझाया—"बेटा, उस गाँव में हमारे रिश्तेदार हैं, लेकिन बात यह है कि वहाँ जाने पर वे लोग हद से ज्यादा सत्कार करते हैं, इसलिए तुम किसी धर्मशाला में जाकर ठहर जाओ।" पर कृष्णकांत यह सोचकर अपने रिश्तेदारों के घर गया कि रिश्तेदारों के यहाँ अतिथि-सत्कार पाने में गलती ही क्या है।

जाड़े के दिन थे। इस कारण पैदल चलने से कृष्णकांत के तलुओं में बिवाइयाँ हो गई थीं। उसने अपने रिश्तेदारों के घर पहुँचकर किवाड़ों पर दस्तक दी। घर के मालिक ने प्रवेश करके किवाड़ खोल दिये, कृष्णकांत से कुशल-प्रश्न पूछे, तब उसने अपनी पत्नी को कृष्णकांत के आने की खबर दी।

इसके बाद कृष्णकांत ने घर के अंदर क़दम रखना चाहा, पर मालिक ने उसे रोककर अपनी पत्नी से कहा—"अरी, सुनो, बच्चे को बुलाओ तो!" कृष्णकांत को बाहर खड़े रहने में बुरा लगा। वह अन्दर जाकर बैठना चाहता था। लेकिन मकान मालिक उसका रास्ता रोके खड़ा था और इधर-उधर की बात करता जाता था। कृष्णकांत ने सोचा कि मकान मालिक उसे जल्दी अन्दर जाने न देगा। इस कारण उसने बाहर चबूतरे पर बैठना चाहा। पर मकान मालिक ने उसे मना करते हुए कहा—"बेटा, थोड़ा रुक जाओ! बच्चा आ जाएगा, तब तक मत बैठो।"

बच्चे के आने में बड़ी देर लगी। लौटने पर वह लोटे में पानी ले आया। इस बीच मकान मालिक ने कृष्णकांत को समझाया—"बेटा, अतिथि देवता के समान होता है,

इसलिए अतिथि का देवता जैसे सम्मान करना मेरे परिवार का रिवाज़ है। परिवार के किसी सदस्य के द्वारा अतिथि के पैर धोने हैं। मगर तुम उम्र में मुझसे छोटे हो। कन्या-दान के समय ही बड़े लोग छोटों के पैर धोते हैं। अन्य समयों में ऐसा करने पर बड़ों की आयु क्षीण हो जाती है। जवान लड़कियों को पराये पुरुषों के पैर नहीं धोने हैं, इसलिए मुझे छोटे के इंतज़ार में रुकना पड़ा। उसे खोजने में देरी हो गई। पैर धोये बिना अतिथि को नहीं बिठाना है, बुरा न सोचो।"

"जी, मेरे तलुवों में बिवाइयाँ हो गई हैं। ठण्डे पानी के लगने से जलन होगी।" कृष्णकांत ने समझाया।

"ऐसा न कहो, बेटा! तुम बहुत दूर पैदल चले आये हो। इसलिए तुम्हें ठण्डे पानी से पैर धोने हैं।" मालिक ने बताया।

इसके बाद बच्चे ने कृष्णकांत के पैर धोये। तब वह भीतर जाकर बैठ गया। मालिक ने नाई को बुलवाकर कृष्णकांत के तलुओं में तेल की मालिश कराई। तब जाकर कृष्णकांत की थकावट मिट गई।

रात को भोजन के बाद पुराण कथा वाचक को बुलाया गया। कथा वाचक आधी रात तक पुराण सुनाकर चला गया।

मकान मालिक ने कहा—"बेटा, कहा जाता है कि अतिथि के साथ पुराण सुनने से पुण्य मिल जाता है। ऐसे समयों का

छोड़ बाक़ी समयों में तुम्हें और मुझे भी पुराण सुनने का मौक़ा कहाँ मिलता है ?"

यों तो कृष्णकांत को जल्दी सो जाने की आदत थी। पुराण वाचन हो रहा था, इसलिए वह ज़बर्दस्ती जागे हुए था। मगर देर हो जाने से उसे नींद न आई।

कृष्णकांत के सोने के लिए आंगन में बिस्तर का इंतज़ाम किया गया। ज्यों ही वह खाट पर लेट गया, त्यों ही छोटे बच्चे ने पिछवाड़े में से शेर जैसे कुत्ते को पकड़ लाकर खाट से बांध दिया।

कृष्णकांत ने अचरज में आकर पूछा—"यह क्या? मेरी खाट से कुत्ता बांधा जा रहा है?"

"बेटा, इस गाँव में चोरों का डर ज़्यादा है। चोर दल बांधकर एक साथ आ जाते हैं, कभी कभी आदमियों को मार डालते हैं। इसीलिए हम कुत्ता पाल रहे हैं। इधर थोड़े दिनों से चोरों का दबदबा कम हो गया है, फिर भी अतिथि की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।" मकान मालिक ने समझाया।

कृष्णकांत कुत्तों के नाम से ही डरता था। यह विदेशी नस्ल का कुत्ता शेर जैसा है। वह उस घर के लिए नया आदमी था। इस वजह से कुत्ता बार-बार उसे सूँघकर टोह ले रहा था। इस डर से उसकी नींद जाती रही।

तड़के उसकी आँख लगने जा रही थी, तभी मकान मालिक ने आकर उसे जगा दिया। उसका कहना था कि अतिथि के जागने पर ही और काम करने चाहिए।

रात भर नींद न होने, यात्रा की थकावट और जलवायु के बदलने से से कृष्णकांत को जुकाम हो गया और वह छींकने लगा।

घर के मालिक की सत्तर साल की बूढ़ी माँ कृष्णकांत के समीप आ पहुँची। ज्यों ही वह छींक देता, त्यों ही गरम पानी में अपनी उंगलियाँ डुबोकर उसके सर पर छिड़कते कहने लगी—"चिरंजीव

भव!" फिर क्या था, जल्द ही उसका सर भीग गया।

जब कृष्णकांत की छींकें बंद हुईं, तब बूढ़ी ने पूछा—"बेटा, अब तबीयत कैसी है?"

"नानीजी, सर पोंछने के लिए तौलिया चाहिए।" कृष्णकांत ने पूछा।

"ऐसा न कहो, बेटा! सर नहीं पोंछना चाहिए। उसे स्वयं सूखने देना है। घर के लोगों की इस प्रकार सेवा नहीं की जा सकती है। लेकिन तुम अतिथि हो, इसलिए विशेष सावधानी रखनी होती है।" बूढ़ी यों समझाकर चली गई।

कृष्णकांत ने इस प्रकार चार दिन बिताये। पुराण श्रवण और कुत्ते के डर से वह चारों दिन बिलकुल सो नहीं पाया।

जिस दिन कृष्णकांत अपने घर जानेवाला था, उसके वास्ते विशेष रूप से एक क़िस्म की शरबत तैयार की गई। घर के मालिक ने शरबत का गिलास कृष्णकांत के हाथ देते हुए कहा—"बेटा, अमृत जैसा यह पेय हम सिर्फ़ अतिथियों के वास्ते ही तैयार करते हैं। यह सात गिलास बनेगी, सारी शरबत तुम्हें अकेले को ही पीना है। घर के लोगों को बिलकुल नहीं पीना चाहिए। यह हमारा रिवाज है।"

कृष्णकांत ने विस्मय मे आकर कहा—"अतिथियों के बारे में ऐसी सावधानी बरतनेवाले लोग नहीं के बराबर हैं। मेरे कारण आप को विशेष कष्ट और खर्चा भी हो गया है।"

"यह कौन बड़ी बात है, बेटा? लेकिन मुझे इस बात का आश्चर्य होता है कि हमारे घर जो भी एक बार आता है, वह फिर कभी नहीं आता।" मालिक ने कहा।

ये शब्द सुन कृष्णकांत आश्चर्य में आ गया। ये लोग हद से ज्यादा भले ही सत्कार करे, पर इनके स्नेह और वात्सल्य में कोई कमी नहीं है। फिर अतिथि क्यों डर जाते हैं? यों सोचते कृष्णकांत ने शरबत का स्वाद लिया।

इसके बाद वह बोला—"मैं अब समझ गया कि एक बार आप के घर आनेवाला अतिथि दुबारा क्यों नहीं आता? आप लोग अतिथि का देवता के समान सत्कार करते हैं। देवता तो पत्थर होता है, इसलिए वह सब कुछ सहन कर सकता है। मगर मानव के लिए यह संभव नहीं है। यह शरबत मुझे अकेले को पीना अन्याय है। आप के घर के सभी लोगों को मेरे साथ पीना होगा।"

घर के लोग तैयार न हुए, तब कृष्णकांत ने जोर देकर कहा—"अतिथि की अंतिम इच्छा को सब को स्वीकार करना होगा।" इस पर सबने शरबत पी ली।

घर के मालिक ने शरबत का स्वाद लेकर क्रोध पूर्ण शब्दों में कहा—"सब लोग शरबत फेंक दो, मत पिओ।" क्योंकि शरबत का स्वाद बड़ा ही खराब था।

इस पर कृष्णकांत बोला—"अब आप ही बताइये, सात गिलास शरबत पीनेवाला अतिथि आप के घर फिर कैसे आयेगा?"

मकान मालिक ने लज्जा के मारे अपना सर झुका लिया। उसने भांप लिया कि उसकी पत्नी अतिथियों के आने से रोकने के लिए ही ऐसी शरबत तैयार करती है।

कृष्णकांत ने समझाया—"अतिथि के प्रति विशेष आदर न प्रदर्शित करके अपने ही परिवार का एक व्यक्ति मान ले तो कोई कठिनाई न होगी। मैं आप के आतिथ्य के प्रति बड़ा ही कृतज्ञ हूँ।" इन शब्दों के साथ वह परिवार के सभी लोगों से विदा लेकर अपने गाँव चला गया।

चोरी की नीयत

रंगनाथ नामक एक आदमी ने रतनलाल नामक एक दूकानदार के पास जाकर कोई काम मांगा।

रतनलाल ने कहा—तुमको मैं अपनी दूकान में नौकरी दूंगा, मगर मैं जो भी काम सौंपूंगा, तुम्हें करना होगा।" रंगनाथ ने मान लिया।

"सुनो, जब तब बगल के दूकानदार अपने गाँव जाया करते हैं। उस वक्त तुम्हें उस दूकान में काम करना होगा। मगर बिक्री के धन में से थोड़ा हिस्सा मुझे देते रहना होगा; पर तुम्हारे बचाने की बात पर दूकानदार को संदेह नहीं होना चाहिए। अगर तुम पकड़े जाओगे तो तुम्हें खुद अपने अपराध को स्वीकार करना होगा; समझें।" रतनलाल ने पूछा।

रंगनाथ ने इस शर्त को भी मान लिया। तब रतननाल बोला—"तब तो तुम जा सकते हो।"

"क्यों?" रंगनाथ ने चकित होकर पूछा।

"क्यों कि तुम्हारी नीयत चोरी की है। मेरी गैर हाजिरी में ऐसे व्यक्ति तुम विश्वास पूर्वक काम करोगे, इसकी क्या गैरंटी है?" रतनलाल ने कहा।
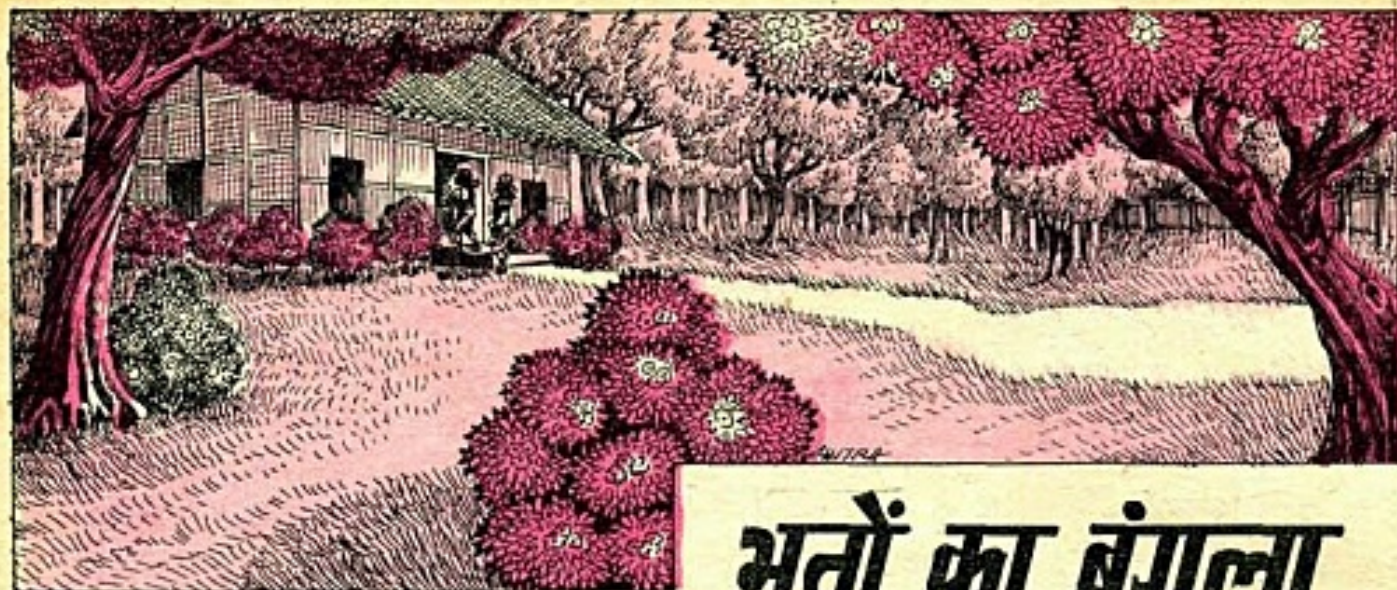
भूतों का बंगला

जमीन्दार राघव राव की गाँव की सीमा पर खाली जमीन थी। उस जमीन को रामू नामक एक अधेढ़ उम्र के व्यक्ति ने किराये पर लिया और इस बात का इकरारनामा लिखवाया कि वह हर महीने में इतनी मात्रा में किराया चुकायेगा; अगर एक साल तक का किराया न चुका पाएगा तो उस जमीन को छोड़ देगा।

रामू अकेला व्यक्ति था। वह किसी से मिलता-जुलता न था। उसने उस खाली जमीन में एक अलीशान बंगला बनाया और उसमें वह अकेले रहने लगा। वह बंगला देखने में बड़ा सुंदर था। बंगले के चारों तरफ़ सुंदर फूलों के पौधे और फलों के पेड़ लगाये गये। बाहर से देखने में वह सुंदर जरूर लगता था, मगर अन्दर जाकर देखने का मौक़ा कभी किसी को न मिलता था।

रामू अपनी रसोई ख़ुद बना लेता था। महीना पूरा होने के पहले ही वह जमीन्दार के यहाँ जाकर किराया चुका देता था। धीरे-धीरे दो साल गुजर गये। उस के प्रति गाँव वालों की जिज्ञसा भी जाती रही। पर लोगों में यह अफ़वाह फैल गई कि वह अकेला नहीं रहता है, उसके साथ भूत भी निवास करते हैं। इस कारण उस ओर जाने से लोग डरते थे।

एक बार महीना पूरा होने पर भी रामू ने जमीन्दार के यहाँ जाकर किराया नहीं चुकाया। एक हफ़्ता बीत गया, मगर रामू का कहीं पता न था। जमीन्दार ने रामू का पता लगाने के लिए अपने नौकरों को भेजा। नौकरों ने बंगले में प्रवेश करके रामू को पुकारा। पर उन्हें भीतर से कोई जवाब न मिला। दर्वाजे पर ताला भी नहीं लगा था। इसलिए नौकरों ने भीतर

जाकर देखा। रामू का सामान जहाँ तहाँ छितरा पड़ा था। मगर उसका कहीं पता न था। दिन भर नौकर रामू के इंतज़ार में मकान के अन्दर ही बैठे रहें, मगर शाम तक रामू न लौटा। इस पर नौकरों ने ताला लगाया और लौट कर ज़मीन्दार को इसकी खबर दी।

दिन व महीने बीत गये। आखिर एक साल भी पूरा हो गया, रामू एक दम गायब था। जमीन्दार ने सोचा कि बंगले पर क़ब्ज़ा करके उसे युवा समाज के कार्यालय के लिए दे दिया जाय। लेकिन लोग यह सोचने लगे कि वह बंगला तो भूतों का अड्डा है।

किसी कारण से भूतों ने ही रामू का अपहरण किया है। इसलिए किसी ने भी बंगले में क़दम रखने का साहस नहीं किया। धीरे-धीरे यह अफ़वाह भी फैल गई कि रात के वक़्त उस बंगले में भूत दिखाई देते हैं।

वास्तव में बात यह थी: रामू का असली नाम कालीपद था। एक दूसरे जिले के डाकुओं के साथ उस की दोस्ती थी। उस डाकू दल ने एक दिन रात को किसी जमीन्दार का घर लूटा और उसे अपने अड्डे पर हिफ़ाजत से रखने के लिए रामू के हाथ सौंप दिधा। रामू धन और गहने लेकर
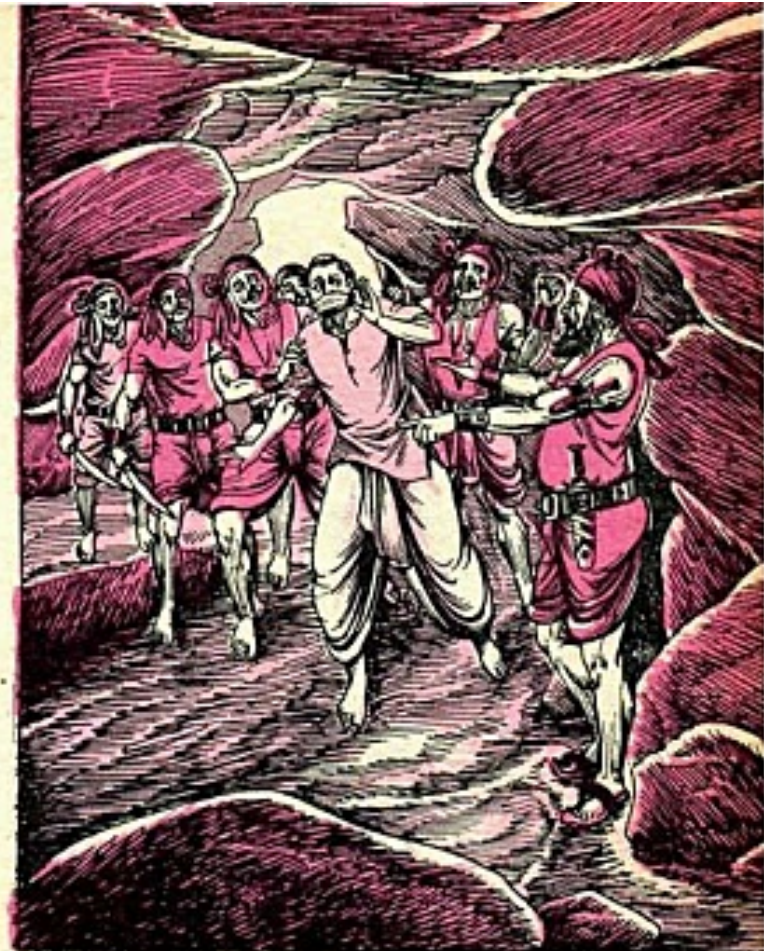
वहाँ से दूर कहीं भाग गया। अपना नाम बदल कर किसी दूसरे जिले में पहुँचा। वहाँ पर लोगों से दूर वह अकेले निवास करने लगा। वह अपना धन व गहने एक पेटी में रखकर उस पेटी को सदा अपने तकिये के नीचा छिपा रखता था। बड़ी सावधानी से उसकी रक्षा किया करता था।

पर धन खोकर सारे डाकू चुप न रहें, उस दल के नेता ने कालीपद का पता लगाया और अपने अनुचरों की मदद से धन की उस पेटी के साथ कालीपद को भी अपने गुप्त अड्डे पर ले गया। वे लोग कालीमाता को कालीपद की बलि देना ही चाहते थे, तभी उनके अड्डे पर पुलिस ने

धावा बोल दिया और सभी डाकुओं को बन्दी बनाया।

इधर जमीन्दार के गाँव में मानस नामक एक कालेज का विद्यार्थी था। जब वह छुट्टी में घर लौटा तब उसे यह खबर मिली कि जमीन्दार ने भूतों वाले बंगले को युवा समाज के कार्यालय के लिए देना चाहा, पर युवकों ने अस्वीकार किया है। शास्त्रीय ज्ञान रखने वाला कोई भी मानव भूत-प्रेतों पर विश्वास नहीं रखता, मगर वह जानता था कि अंध विश्वास रखने वाले युवक और ग्राम बासी भी उसके विश्वासों की उपेक्षा करेंगे। तर्क करने पर भी कोई नतीजा न निकलेगा। कोई ऐसा उपाय करना होगा जिससे वह सभी लोगों के विश्वास का संपादन कर सके।

यों विचार करके मानस ने सुरजित नामक युवा समाज के नेता से मिलकर कहा—"भाई साहब! जमीन्दार साहब हम पर कृपा करके युवा-समाज के कार्यालय के लिए बंगला हमें दे रहे हैं, मगर भूतों का हमें पिंड छुड़ाना है।"

"भूतों का पिंड छूट जाय तो हम मजे से बंगला का उपयोग कर सकते हैं।" सुरजित ने जवाब दिया।

"क्या हमारे गाँव में कोई ऐसा ओझा नहीं है जो भूतों को बंगले से भगा सके?" मानस ने पूछा।

"जो हैं, वे भी बेकार के आदमी हैं!" सुरजित ने उत्तर दिया।

"मुझे थोड़ा समय दिया जाय तो मैं भूतों को भगाने का कोई रास्ता निकाल सकता हूँ।" मानस ने समझाया।

युवा समाज के नेता ने मान लिया।

दो दिन बाद मानस शहर से सत्यानंद नामक एक भूत वैद्य को बुला लाया। भूत वैद्य केश बिखेरे, लाल वस्त्र धारण किये हुए था। मानस ने अपने मित्रों को उसका परिचय कराते हुए बताया कि वह एक नामी भूत वैद्य है। उसने इसके पूर्व अनेक भूतों को भगाया है।

दूसरे दिन शनिवार था। उसी दिन बंगले से भूतों को भगाने के प्रयत्न शुरू हुए। बंगले में सब जगह फूल बिखेरकर गुग्गुल का धूप लगाया गया। वहाँ पर उपस्थित ग्रामवासियों से भूत वैद्य ने कहा–"महाशयो! मुझे ऐसा लगता है कि यहाँ पर ब्राह्मण भूत है। मैंने उसे संतुष्ट करके बंगला छोड़ जाने को मना लिया है! मैं उसे बोतल के अन्दर भेज देता हूँ। उसको बोतल में भेजकर पानी में गिरा दे तो वह दूसरे लोक में शाश्वत रूप से शांति पा सकता है। आप लोग अनुमति दे तो मैं ऐसा ही करूँगा। बताइये, आप लोगों का क्या इरादा है?"

सब लोग एक स्वर में चिल्ला उठे–"आप ऐसा ही कीजिए। हमें कोई आपत्ति नहीं है, बल्कि ख़ुशी होगी।" सत्यानंद की वेष-भूषा और उसकी बोली देख सबका उस पर विश्वास जम गया।

सत्यानंद के सामने जमीन पर चौड़े मुँहवाली एक बोतल खड़ी कर दी गई थी। उसकी बगल में एक केला था। मगर बोतल की चौड़ाई उसके मुँह से थोड़ी अधिक थी। कोई विचित्र अक्षर लिखे गये एक बड़ा काग़ज़ सत्यानंद ने हाथ में लिया। उस पर लिखा मंत्र पढ़ा, तब उसने वह कागज़ बोतल के अन्दर डाल दिया। उस पर तेल छिड़का दिया, तब उसे जलाया। बोतल के भीतर का कागज़

जलने लगा, तब केला लेकर उसके निछले भाग में थोड़ा छिलका निकाला, तब उसे बोतल के मुँह में घुसेड़ दिया। केला बोतल के मुंह पर खड़ा रहा, पर ज्यों ही सत्यानंद मंत्र पढ़ने लगा, त्यों ही केला बोतल के भीतर धीरे से सरकने लगा। बोतल इस प्रकार केले को निगलने लगी कि लोग उसे देख दंग रह गये। लोगों ने सोचा कि शायद बोतल के भीनर अदृश्य रूप में रहनेवाला भूत उसे प्रेमपूर्वक ग्रहण करता होगा। जल्द ही केला बोतल के अन्दर चला गया और उसका छिलका बाहर गिर गया।

इसके बाद सत्यानंद ने बोतल के मुंह पर डाट लगाई। तब बोला—"इस वक़्त भूत मेरे अधीन में है। बंगले को इसका पिंड छूट गया है। आप लोग निर्भय बंगले का उपयोग कर सकते हैं।" ये शब्द कहकर वह उठ खड़ा हुआ और सबके साथ बंगले में प्रवेश किया। उसी दिन शाम को उस बंगले में युवा समाज का उद्घाटन हुआ। उसकी अध्यक्षता जमीन्दार ने ही की।

घर लौटने पर मानस ने सत्यानंद से पूछा—"महाशय! भूत की यह प्रक्रिया कैसी? केला जब बोतल के अन्दर खिसकने लगा तब मैं विस्मय में आ गया। क्या बोतल में जो थोड़ी गर्मी पैदा हो गई, तब हवा के दवाब से केला अन्दर खिसक गया?" वास्तव में सत्यानंद मानस के सहपाठी का चाचा था। उसने जो केश और वस्त्र पहने थे, वे किराये पर लाये गये थे।

मानस का सवाल सुनकर सत्यानंद हँस पड़ा और बोला—"हाँ, मानस! जब बोतल में आग जलाई जाती है, तब उसके भीतर की हवा अत्यंत व्याकोच को प्राप्त हो जाती है। उस वक़्त बोतल के मुँह पर केला रखने से भीतर की हवा शीतल होकर संकोच को प्राप्त होती है। तब बाहर की हवा के दवाब से केला बोतल के भीतर खिसक जाता है।"

हनुमान अयोध्या के रास्ते में महामुनि वाल्मीकी के आश्रम में उतर पड़े, उन्हें प्रणाम करके बोले–"महानुभाव! यह सब क्या हो गया है?"

वाल्मीकि ने मुस्कुराकर कहा–"हनुमान, तुम सब कुछ जानते हो! राज्य का शासन कैसे कठोर होता है। शंबुक जैसे साधु प्रकृति के लोग उच्च वर्गों के प्रभाव के कारण कैसे मारे जाते हैं। यह जानते हुए भी शासकों को पाप का भागी होना पड़ता है, मायावी एवं पापी लोगों के मुँह से निकले विष के बीज साधारण जनता में न फैले, इसके वास्ते शासकों को कैसे त्याग करने पड़ते हैं, यह सावित करने के लिए ही ऐसा हुआ है!"

इसके बाद हनुमान ने वाल्मीकि आश्रय में सीताजी की कुटी, कुश-लवों ने वृक्षों के तनों पर बाणों के जो निशान लगाये थे, उन्हें भी दिल खोलकर देखा। सीताजी के चरण जिस धरती पर पड़े थे, उस स्थान को अपनी आँखों से लगाकर हनुमान उड़कर अयोध्या की ओर चले गये।

हनुमान अयोध्या में पहुँचकर राजमहल के सामने स्थित उद्यान में उतर गये।

वहाँ पर कुश-लव उत्साहपूर्वक धनुर्विद्या का प्रदर्शन कर रहे थे। उन दोनों के बीच बाणों से निर्मित एक स्तम्भ वाला महल उठ खड़ा हुआ था। कुश-लव ने हनुमान को देख आँखों का इशारा करके उनके चारों तरफ़ बाणों की बाड़ी लगाई।

४३. शेष शत्रुओं का अंत

लव को रोकते हुए कुश ने कहा–"तुम जब तक यह साबित न करोगे कि तुम्हीं हनुमान हो, तब तक हम तुम्हें यहाँ से हिलने न देंगे।"

"तुम अपने शौर्य का परिचय दो, तब विराट रूप दिखाओ।" लव ने पूछा।

इस पर हनुमान ने अपने विशाल रूप का प्रदर्शन करके दोनों भाइयों के साथ आलिंगन कर लिया। उन्हें अपनी पीठ पर बिठाकर आसमान में उड़ गये, सरयू नदी के ऊपर उड़ते अयोध्या नगर की परिक्रमा की। आसमान की ऊँचाई तक अपने शरीर का विस्तार करके उन्हें वह रूप दिखाया जो विश्वरूप सीताज़ी को दिखाया था। दुर्ग की दीवारों पर दोनों भाइयों को घुमाते बोले–"मैंने मैरावण के संहार के समय राम-लक्ष्मण को इसी प्रकार ढोया है।"

तब लव-कुश ने हनुमान को प्रणाम करके मुस्कुराते हुए क्षमा माँगी–"हनुमान जी! आप के शौर्य का परिचय पाकर प्रसन्न होने के लिए ही हमने आप को इस प्रकार नचाया है।"

इसके बाद लव-कुश हनुमान के दोनों हाथ पकड़कर रामचन्द्रजी के पास ले गये।

हनुमान को देखते ही रामचन्द्रजी की आँखों में आँसू आ गये। हनुमान

इसके बाद लव ने गरजकर पूछा–"हे मायावी, तुम कौन हो?"

लव में सीताजी की आकृति स्पष्ट परिलक्षित होती थी और कुश रामचन्द्र की आकृति को लिये हुए था सीता-राम जैसे दीखनेवाले लव-कुशों को प्रसन्नता पूर्वक देख हनुमान ने उत्तर दिया–"मैं हनुमान हूँ! मुझे इसी समय रामचन्द्र जी के दर्शन करने हैं।"

"हम तुम पर विश्वास नहीं कर सकते! तुम अपने हाथ गदा लेकर हनुमान के वेष में आये हुए मायावी हो! मारीच तुम्हें क्या लगता है?" ये शब्द कहते लव ने धनुष पर बाण चढ़ाया।

रामचन्द्रजी के सामने घुटने टेक कर बोले–"आप एक साधारण मानव जैसे दुख के वशीभूत हो जायेंगे तो कैसे? राज्य शासन फूलों की सेज नहीं, कठिन कार्य भी करने पड़ते हैं, यह बात भावी पीढ़ियों को बताने के लिए तथा राम-राज्य को उदाहरण के रूप में लेने के वास्ते ही तो ऐसा हो गया है। महानुभाव! आप जो भी कार्य करते हैं, उस के पीछे एक परम अर्थ होता है, इसे जो समझ पाते हैं, वे ही इस को जान सकते हैं।" यों हनुमान ने रामचन्द्रजी को सांत्वना दी।

इस पर रामचन्द्रजी बोले–"हनुमान, तुम्हारी बातें सुनने पर मेरा मन थोड़ा हल्का हो गया है। सीताजी के वियोग से मैं बहुत दुखी हूँ, उसके साथ यदि अश्वमेध यज्ञ भी असफल हो गया तो तुम अपने राम को नहीं देख सकते। लगता है कि इस वक़्त यज्ञ का अश्व मणिपुर की दिशा में जा रहा है! इस घोड़े की रक्षा का भार मैं तुम्हारे कंधों पर भी सौंप रहा हूँ। इसीलिए मैं ने तुम्हें बुलाया है। तुम भी जाकर उनसे मिल लो!"

रामचन्द्रजी का आदेश पाकर हनुमान आसमान में उड़ गये। एक घने जंगल में एक राक्षसी तथा एक राक्षस चिल्लाते मध्यपान करके डोल रहे थे। हनुमान के मन में संदेह हुआ। वे सूक्ष्म रूप धारण कर एक पेड़ पर उतर कर ताक लगाये बैठे रहे। वे दोनों थोड़ी देर बाद नृत्य बंद करके पेड़ के नीचे आ पहुँचे और वार्तालाप करने लगे। हनुमान उनकी बातचीत ध्यान से सुनने लगे: राक्षसी कह रही थी–"बुजुर्गों ने बताया है कि शत्रु का अंत करना चाहिए हमने अपने भाइयों का ऋण चुकाया है हे करालकंठ! उस दिन रात को धोबी के रूप में तुम अपने कराल कंठ से कैसे अच्छे चिल्ला उठे!"
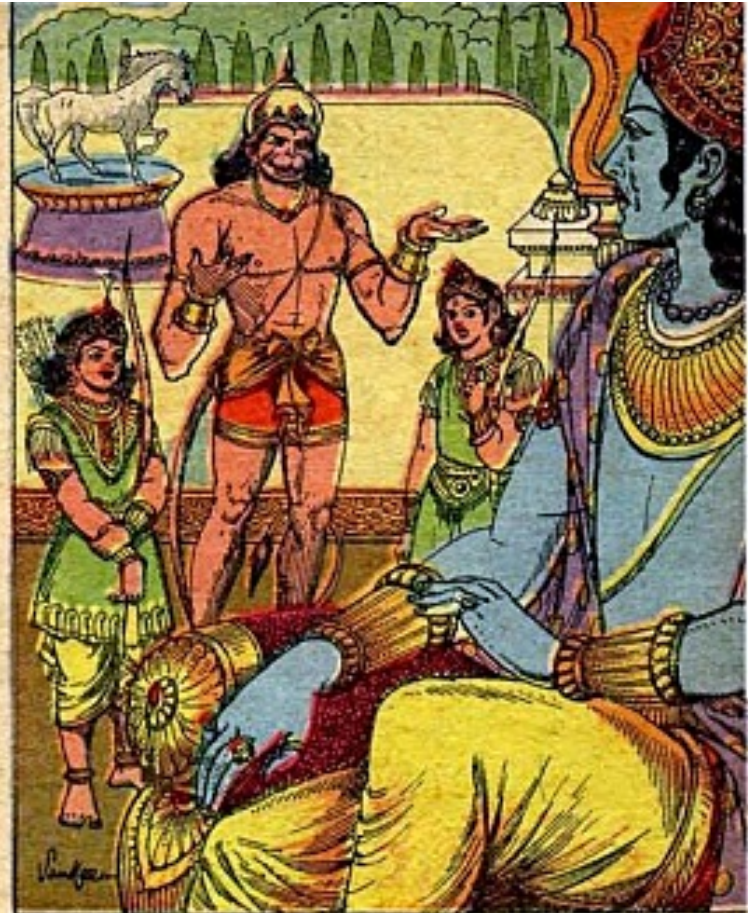
"हे शूर्पणखे! तुम भी कैसे अच्छे रो पड़ी थी? अरी चालाक धोबिन!" कराल कंठ ने शूर्पणखा के अभिनय की तारीफ़ की।

करालकंठ वास्तव में शतकंठ रावण का छोटा भाई था। वह उस समय युद्ध भूमि से भाग कर बच गया था। अपने भाई का वध करनेवाले सीताजी तथा रामचन्द्रजी से बदला लेने केलिए वह धोबी के रूप में अयोध्या पहुंच गया था। रावण की बहन शूर्पणखा प्रतीकार की भावना से धोबिन के रूप में अयोध्या पहुँच गई थी। बड़े ही विचित्र ढंग से उनकी मुलाक़ात हो गई।

दोनों भूख से परेशान थे। कोई मानव मिल जाय तो खाने के ख़्याल से वे अयोध्या की सीमा पर घूम रहे थे। दोनों की धोबी व धोबिन के रूप में वहाँ पर मुलाकात हो गई। शूर्पणखा अपने नखरे दिखाते कराल को खींच ले गई। कराल यह सोच कर उसके पीछे पड़ा कि आखिर औरत का मांस भी क्यों न हो, भूख मिटाने के लिए खाना ही पड़ेगा। शूर्पणखा ने यह सोच कर राक्षसी रूप धारण किया कि आखिर उसे एक मानव मिल गया है। वह अपना मुँह बायें उसकी ओर झपट पड़ी, इस पर कराल अपने राक्षस रूप में प्रकट हो चिल्ला उठा— "अरी कमबख़्त! तुम भी राक्षसी हो! मैं नें तुम्हें मानवी समझा था!" इसके बाद वे दोनों धोबी दंपति के रूप में कपट नाटक रच कर अयोध्या से भाग खड़े हुए और तब से जंगलों में निवास करने लगे।

पेड़ पर बैठे हनुमान ने उनकी बातें सुन लीं; कराल आगे कह रहा था—"उस वक़्त अयोध्या में हनुमान न था। इसलिए हम बाल-बाल बच गये। वरना वह हमारा पता लगाकर हमें भी अपने अपने भाइयों के पास भेज देता। हमारी क़िस्मत अच्छी रही, इसीलिए हनुमान किसी पहाड़ पर रह गया था।"

"सुनो, तुम उस वानर का नाम मत लो! उस का नाम सुनने पर मेरा क्रोध उबल पड़ता है।" शूर्पणखा बोली।

"अरी, क्रोध मत कहो, तुम्हारा कलेजा धड़क उठता है न!" दांत दिखाते कराल ने मज़ाक उड़ाया।

"उस कमबख्त वानर ने मेरे सोने के महल को जला डाला है। वह प्यारा महल मेरे भाई ने मेरे वास्ते बनाया था। इसीलिए उसके नाम से मैं जलती हूँ।" यों कहते शूर्पणखा ने अपनी पीठ टटोल ली। उसकी पीठ पर एक दाग था। लंका-दहन के वक्त जलने वाला एक शहतीर उसकी पीठ पर गिर गया था, जिस से उसकी पीठ पर एक बड़ा दाग हो गया था। कराल ने उस दाग को देख मजाक किया—"अब मैं समझ गया। इसीलिए तुम उस वानर से जलती हो। क्या अब भी वह दाग जलता है? बेचारी का महल तो जल गया, पर उसका दाग तो रह गया!" वह बोली—"अबे अपना मजाक रहने दो!"

"शूर्पणखे! मुझे भी हनुमान का नाम सुनने पर गुस्सा आ जाता है। वह बड़ा दुष्ट है, समझीं!" कराल कंठ बोला।

"ऐसा कहो! वीर की तरह डींग मत मारो। उसे देखते ही तुम जान बचा कर भाग जो गये थे! कमबख्त! तुम अव्वल दर्जे के कायर हो! लडाई में वीर की भांति तुम क्यों नहीं मरे?" शूर्पणखा ने ताने दिये।

"हाँ, भाग गया था, तभी तो मैं राम के साथ बदला ले सका और तुम जैसी सुंदरी राक्षसी मेरे हाथ लगी!" करालकंठ ने अपनी कथनी का समर्थन किया।

"चलो, अब हम कहीं दूर जाकर अपने जीवन को सार्थक बना लेगें! "शूर्पणखा ने समझाया।

"हाँ, तब तो हम एक काम और करके तब चलेंगे। इस वक्त हमें राम के यज्ञाश्व को पकड़ लेना है!" करालकंठ ने अपने मन की बात कही।

"वाह! यह तो बड़ा अच्छा उपाय है। हम उस घोड़े पर सवार करेंगे।" शूर्पणखा बोली।

जलवृक ये शब्द सुनकर आपाद मस्तक कांप उठा, तब बोला—"मालिक! आप मेरी बातों पर यक़ीन नहीं करते। मेरी मौत अब निश्चित है। फिर भी मैं अपने मुँह से बताये बिना इशारों से समझा दूँगा, देखूँगा, शायद मैं बच जाऊँ!" यों कहकर वह पेड़ से एक सूखी लकड़ी तोड़ लाया।

"वृकभट! तुम्हारे प्राणों के लिए कोई खतरा नहीं है। मैं महाकाल का भक्त हूँ। अगर किसी कारण से तुम मर भी जाओगे, तो तुम्हें कुछ ही मिनटों में कैलास भेजकर वहाँ पर सुखी बनने दूँगा।" सिद्ध साधक शूल उठाये आसमान की ओर देखते बोला।

जलवृक सूखी लकड़ी से जमीन पर लकीरें खींचते जब-तब चिल्लाने लगा—"ओह! मेरा सर फटा जा रहा है। मेरा कलेजा सिकुड़ रहा है।"

राजा कनकाक्ष जलवृक के समीप जाकर सिद्ध साधक से बोला—"सिद्ध साधक, मेरे बच्चों को पर्याप्त अंग रक्षकों का साथ दिये बिना जंगल में जाने देना कैसी विपदाओं का कारण बन गया है? बेचारा यह जलवृक सचमुच सर फूट जाने के कारण मर जाय तो?"

"महाराज! यह तो निरे मूर्ख है। महाकाल के दर्शन पाकर उनके आशीर्वाद

पाये बिना कोई भी मानव दूसरों को शाप देने की शक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।" यों समझाकर सिद्ध साधक जलवृक के द्वारा खींची गई रेखाओं को देख पूछ बैठा—"अरे जलवृक! ये रेखाएँ कैसी? ये टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें क्या हैं?"

जलवृक राक्षस सर उठाये बिना आपाद मस्तक कांपकर बोला—"मालिक! ये तो निकट के पहाड़ हैं और ये हैं जंगल के वृक्ष। उनमें सबसे ऊँचा वृक्ष एक टीले पर है। उस पेड़ पर चढ़कर ऊपरी डाल पर पहुँच करके एक बार पूरब की दिशा में, फिर पश्चिम की ओर देख, तब उत्तर की दिशा में मुखातिब होने पर माया

शूर्पणखा कराल के हाथ पकड़कर दोनों चलने को हुए, तभी हनुमान ने अपनी पूंछ बढ़ाकर उनके रास्ते को रोक लिया।

"साँप! अरी, महा सर्प है।" कराल कंठ चिल्ला उठा।

शूर्पणखा ध्यान से देखकर चीख उठी—"साँप नहीं, पूँछ है। यमराज के द्वारा फेंका गया फाँसी का फंदा है। वानर-हनुमान की पूँछ है रे!"

"अरी, चुप रहो! यहाँ पर हनुमान कैसे आ सकता है? तुम नाहक़ डरती हो!" कराल कंठ ने समझाया।

"अरे, मुझे अच्छी तरह से याद है। लंका को जलानेवाली पूँछ यही है रे!" कांपते हुए शूर्पणखा बोली। शूर्पणखा की बातें सुन कराल कंठ भागने को हुआ, तब शूर्पणखा चिल्ला उठी—"अबे, तुम मुझे अकेली को छोड़ कहाँ भागते हो?" यों कहते शूर्पणखा ने दौड़ते जाकर उसको पकड़ लिया। इस बीच हनुमान पेड़ पर से उतर पड़े और भयंकर रूप धारण कर खड़े हो गये। वे दोनों राक्षस चीखते-चिल्लाते भागते जा रहे थे, तब हनुमान ने एक बड़ा पर्वत उखाड़कर उन पर फेंक दिया। फिर क्या था, दोनों राक्षस उस पर्वत के नीचे दबकर मर गये।

इस प्रकार शत्रुओं का अंत करके हनुमान प्रसन्न हो उठे और उन्होंने सिंहनाद किया। तब आसमान में उड़कर मणिपुर की दिशा में चले गये।

हनुमान आसमान में उड़ते गंगा नदी की उप नदियों को सुंदर वनों से होकर बहनेवाली गंगा की धारा को पार कर मणिपुर के समीप पहुँचे। दूर पर ब्रह्मपुत्र नदी ऐसे दिखाई दी मानो चांदी के गलने पर उसकी धातु चमक रही हो।

उस वक़्त हनुमान को लगा कि मणिपुर की राजधानी की सीमा पर आसमान में बिजली की कौंध की भांति चमककर कोई बड़ी चीज़ अदृश्य हो गयी। हनुमान बिजली के वेग के साथ उस ओर उड़ चले।

गंगावतरण

अयोध्या पर प्राचीन काल में राजा सगर शासन करते थे। उनके केशिनी और सुमती नामक दो पत्नियाँ थीं। उनके कोई संतान न थी। इसलिए सगर ने अपनी पत्नियों के साथ हिमालयों में जाकर तपस्या की।

इसके परिणाम स्वरूप केशिनी के असमंज नामक एक पुत्र हुआ। सुमती ने एक पिंड का जन्म दिया जिसके फूटने से उसमें से एक हज़ार पुत्र प्रकट हुए।
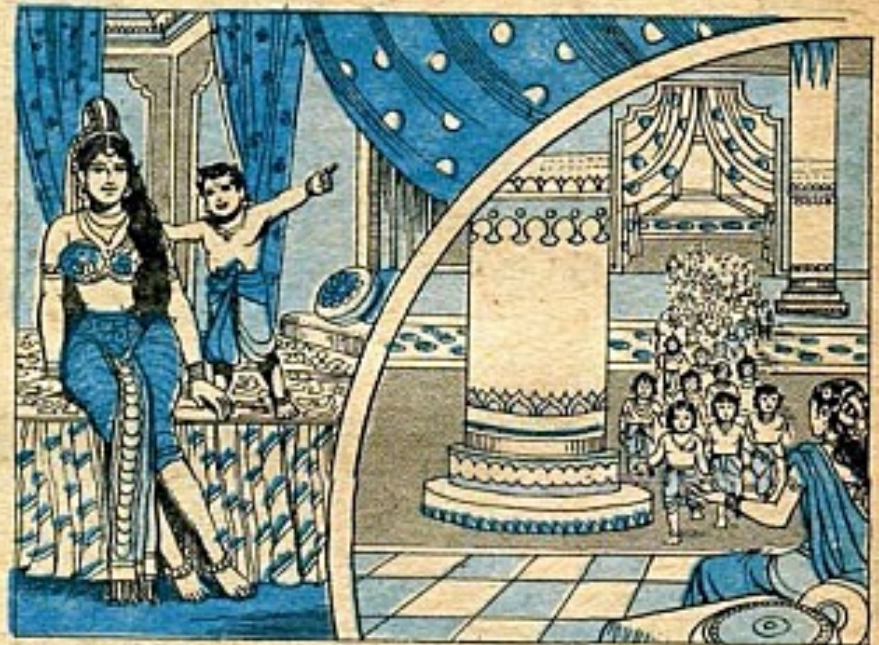
सगर ने अश्वमेध यज्ञ करके घोड़े को छोड़ दिया। सगर की प्रभुता के बढ़ते देख इन्द्र ने ईर्ष्यावश यज्ञ के अश्व को हड़पकर पाताल में कपिल के आश्रम में छिपा दिया।

अपने घोड़े के गायब हो जाने का समाचार जानकर उसकी खोज करके पकड़ लाने के लिए सगर ने अपने एक हज़ार पुत्रों को भेजा। उन लोगों ने सभी दिशाओं में घोड़े को ढूंढ़ा, पर उसका पता न चला।

अंत में उन लोगों ने पृथ्वी को खोदकर पाताल में घोड़े को देखा। वे लोग घोड़े को लाकर पृथ्वी पर लौट ही रहे थे कि कपिल ने अपनी क्रुद्ध दृष्टि द्वारा उन्हें भस्म किया।

कई साल बीत गये, पर अपने पुत्रों के लौटते न देख सगर ने उनका पता लगाने के लिए असमंज के पुत्र अंशुमंत को भेजा। अंशुमंत पाताल लोक में पहुँचा। कपिल को प्रसन्न करके घोड़े को वापस लाया। मगर भस्म हुए सगर के पुत्रों को जिलाना उसके द्वारा संभव न हुआ। इसके वास्ते देवलोक से गंगाजी को पृथ्वी पर लाना जरूरी था।

अंशुमंत के पुत्र दिलीप ने यह कार्य करने का प्रयत्न किया। मगर उससे संभव न हो पाया। इसके बाद दिलीप के पुत्र भगीरथ ने दीर्घकाल तक तप किया। उसने गंगाजी को पृथ्वी पर लाने का वर ब्रह्मा से प्राप्त किया।

मगर शक्तिशालिनी गंगाजी की धारा का पृथ्वी पर गिरने से ख़तरा था। उसके धक्के को सहन कर सकनेवाले केवल शिवजी ही थे। इस कारण भगीरथ ने शिवजी के प्रति तपस्या करके उनकी सहायता प्राप्त की।

हिमालयों में शिवजी गंगाजी को स्वीकार करने के लिए तैयार खड़े थे। फिर क्या था, गंगाजी उनके जटाजूटों में आ गिरीं। जब उस प्रवाह का वेग कम हो गया, तब गंगाजी धीरे से पृथ्वी पर उतर पड़ीं।

काकोलूकीयम

[५८]

राजा तथा चार मंत्रियों का विश्वास स्थिरजीवी के प्रति जम गया। इसलिए रक्ताक्षी के विरोध करने पर भी वे सब स्थिरजीवी को अपनी गुफा में ले गये। जब वे पहाड़ी गुफा में पहुँचे, तब अरिमर्दन ने उन्हें सुझाया–"स्थिरजीवी हमारा हितैषी है, इसलिए वह हमारे किले में जो स्थान पसंद करता है, वही स्थान उसे दे दो।"

ये बातें सुन स्थिरजीवी ने मन ही मन में यों सोचा : "मैं तो इन सबके विनाश की योजना बना रहा हूँ। क़िले के बीच रहने से सब लोगों पर मेरी गति विधियों का रहस्य प्रकट हो जाएगा। ख़ासकर रक्ताक्षी और उसके अनुचर हज़ार आँखों से मुझ पर निगरानी रखे रहेंगे। इसलिए क़िले के द्वार के निकट रहने से जरूरी कार्यों पर बाहर जाने व आनेवाले लोग मेरे कार्यों पर ध्यान न देंगे।"

यों सोचकर स्थिरजीवी ने अरिमर्दन से कहा–"महाराज! आप तो बड़े ही उदार स्वभाव के हैं। मुझे आप अपने क़िले के भीतर थोड़ी-सी भी जगह दे तो पर्याप्त है! मैं रोज आप की सेवा में हाजिर होकर अपने कर्तव्य का पालन करूँगा।"

अरिमर्दन स्थिरजीवी की नम्रता देख बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसकी इच्छा मान ली। स्थिरजीवी अपना स्वास्थ्य पुनः प्राप्त कर ले, इस ख़्याल से उसे विशेष प्रकार के भोजन का प्रबंध किया गया।

अपनी सलाह की उपेक्षा करने तथा स्थिरजीवी के प्रति विशेष आदर प्रदर्शित करते देख रक्ताक्षी राजा से बोला–"महाराज, सोने का मल देनेवाले पक्षी

कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता

कहानी का सुंदर शीर्षक देकर रु. २५ जीतिए!

?

एक दिन एक राजा एक सन्यासी को देखने गये और नमस्कार करके बोले—"महात्मा, ईश्वर को प्राप्त करने के लिए आप जैसे पुण्यात्मा इस संसार की समस्त वस्तुओं का त्याग करते हैं, पर यह हम जैसे लोगों के लिए संभव नहीं है। मैं नहीं जानता कि इस संसार के बंधनों से मुक्ति न पा सकने के कारण न मालूम कितने पाप कर रहा हूँ।"

सन्यासी राजा के व्यवहार पर खीझकर बोले—"राजन, आप यह क्या कह रहे हैं? आप तो मुझसे भी बड़े त्यागी हैं। मुझे तो आप के चरण धोकर उस जल को अपने सिर पर डालना होगा।"

राजा को लगा कि सन्यासी की बातों में व्यंग्य छिपा हुआ है, इसलिए उन्होंने पूछा—"महात्मा, आप यह क्या कह रहे हैं?"

"राजन, मैंने ठीक ही कहा है, आप बताइये कि यह संसार ज्यादा महत्वपूर्ण है या भगवान?" सन्यासी ने पूछा।

"भगवान ही!" राजा ने जवाब दिया।

"तब तो मैंने इस संसार को त्याग दिया तो आप ने भगवान को ही त्याग दिया है। इसलिए आप का त्याग मेरे त्याग से बड़ा है न?" सन्यासी ने उत्तर दिया।

★ ★ ★

उपर्युक्त कहानी के लिए सोच-समझ कर एक कार्ड पर उत्तम शीर्षक लिखकर "कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता" चन्दामामा, २ & ३, अर्काट रोड, वड़पलनी, मद्रास-६०००२६ के नाम भेज दीजिए। लिफ़ाफ़ों में प्राप्त उत्तरों पर विचार नहीं किया जाएगा।

कार्ड हमें मई १० तक प्राप्त हों और उसमें फोटो-परिचयोक्तियाँ न हों। इसके परिणाम चन्दामामा के जुलाई '७८ के अंक में घोषित किये जायेंगे।

मार्च मास की प्रतियोगिता का परिणाम: "जो बोवे सो काटे"

पुरस्कृत व्यक्ति: विजय कुमार गुप्त, १२/१३३०, शहीद गंज, सहारनपुर-२४७००१

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां जुलाई १९७८ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

Srivatsa S. Vati

★

Azmat A. Syed

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ मई १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

मार्च के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : सारा मत पी जाओ भाई !

द्वितीय फोटो : लगता खाई बहुत मलाई !!

प्रेषक: चिया रानी, C/o आनंद कुमार, ११वीं बटालियन एस. ए. एफ़, भिलाई, म. प्र.

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

हमें तो
प्यारा लगता है
चन्दामामा
चन्दामामा
आप को भी प्यारा लगेगा
चन्दामामा को हरेक पुरुष, हरेक स्त्री और हरेक बच्चा
पढ़ता है। अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, गुजराती,
मलयालम, बंगला, उड़िया, पंजाबी और असामी इन बारह
भाषाओं में प्रकाशित बच्चों के इस मासिक पत्र में अत्यंत
रोचक, और आश्चर्य भरी कहानियाँ रहती हैं;
जो हर दिल में एक उत्साह, एक उमंग भर देती है।
चन्दामामा बालकों का अपना मासिक पत्र जिससे बड़े बनते
नौजवान और नौजवान बनते बड़ों जैसे बुद्धिमान!

‘हाय ! क्या गज़ब का स्वाद.’

गोल्ड स्पॉट–स्वाद की गवाही, मुस्कुराहट बन के आई

पारले
क्रॅकजॅक नाट्यम्
"धीन त न न धीन नमकीन नमकीन"
"ता तई तई ता मीठा मीठा"
खुले कभी नहीं मिलते— नकलों से बच के रहिए!
Krackjack
मीठा नमकीन उत्तम स्वादम्
जय जय पारले जय क्रॅकजॅकम्